संग्रहालय----------

मुद्रा वह है जिसमें किसी देश की सांस्कृतिक धरोहर के अंतर्निहित घटक होते हैं और जिसमें उस देश के सामाजिक आर्थिक इतिहास की झांकी दिखाई देती है। पूरे विश्व के देशों में सिक्कों की ढलाई कर उन्हें जारी करनेवालों में भारत का स्थान सर्वप्रथम है और इतिहास में दर्ज तमाम मौद्रिक प्रयोगों का स्थान भी भारत में ही रहा है।

भारतीय रिज़र्व बैंक मौद्रिक संग्रहालय का लक्ष्य इस धरोहर का प्रलेखीकरण करना और उसे संरक्षित रखना है। संग्रहालय का प्रस्ताव है कि भारत में भिन्न-भिन्न काल में प्रचलन में रहे प्रातिनिधिक ढलुवा सिक्कों, कागजी मुद्रा, स्वर्ण छड़ियों और साथ ही वित्तीय लिखतों और कौतूहलजनक विषयों के स्थायी, अस्थायी और परिभ्रामी प्रदर्श को प्रदर्शित किया जाए। इसका एक लक्ष्य हिंद महासागर के आस-पास मुद्रा के प्रादुर्भाव पर अनुसंधान और अध्ययन को बढ़ावा देना तथा आम जन के बीच करेंसी तथा वित्त की जानकारी का प्रचार-प्रसार करना भी है।

इस साइट पर उपलब्ध सामग्री मात्र जानकारी के लिए है और इसे रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशित आंकड़े समझने की भूल न की जाए। कोई भी जानकारी, दर्शकों के अभिमत और पत्राचार आदि museum@rbi.org.in पर भेजे जा सकते हैं।

प्रातिनिधिक भारतीय ढलुवा सिक्के
नमूना

कागज़ी मुद्रा और
आपात मुद्रा...
सिंहावलोकन

देशी बैंकिंग और वित्तीय कौतूहल
एक झलक

सामान्य जानकारी

मुद्रा वह है जिसमें किसी देश की सांस्कृतिक धरोहर के अंतर्निहित घटक होते हैं और जिसमें उस देश के सामाजिक-आर्थिक इतिहास की झांकी दिखाई देती है। पूरे विश्व के देशों में सिक्कों की ढलाई कर उन्हें जारी करनेवालों में भारत का स्थान सर्वप्रथम है और इतिहास में दर्ज़ तमाम मौद्रिक प्रयोगों का स्थान भी भारत ही रहा है।

भारतीय रिज़र्व बैंक मौद्रिक संग्रहालय का लक्ष्य इस धरोहर का प्रलेखीकरण करना और उसे संरक्षित रखना है। संग्रहालय का प्रस्ताव है कि भारत में भिन्न-भिन्न काल में प्रचलन में रहे प्रातिनिधिक ढलुवा सिक्कों, कागज़ी मुद्रा, स्वर्ण छड़ियों और साथ ही वित्तीय लिखतों और कौतूहलजनक विषयों के स्थायी, अस्थायी और परिभ्रामी प्रदर्श को प्रदर्शित किया जाए। इसका एक लक्ष्य हिंद महासागर के आस-पास मुद्रा के प्रादुर्भाव पर अनुसंधान और अध्ययन को बढ़ावा देना तथा आम जन के बीच करेंसी तथा वित्त की जानकारी का प्रचार-प्रसार करना भी है।

इस साइट पर उपलब्ध सामग्री मात्र जानकारी के लिए है और इसे रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशित आंकड़े समझने की भूल न की जाए। कोई भी जानकारी, दर्शकों के अभिमत और पत्राचार आदि museum@rbi.org.in पर भेजे जा सकते हैं।

प्रातिनिधिक भारतीय ढलुवा सिक्के
नमूना

कागज़ी मुद्रा और
आपात मुद्रा...
सिंहावलोकन

देशी बैंकिंग और वित्तीय कौतूहल
एक झलक

भारतीय ढलुवा सिक्के

सिंहावलोकन

भारत विश्व के उन प्राचीनतम देशों में से एक है जहाँ सिक्के जारी किए जाते थे (सिरका छठीं शताब्दी ईसा पूर्व)। केवल कुछ ही देश भारतीय सिक्कों की विविधता का मुकाबला कर सकते थे चाहे वह मुद्रण तकनीक, मोटीफ़ (अवधारणा), आकार-प्रकार, उपयोग में लाई गई धातु की विविधता हो अथवा चाहे वह भारत को हासिल हुई मौद्रिक मानकों के परिप्रेक्ष्य में मौद्रिक इतिहास हो (तीन धातुओं, दो धातुओं से निर्मित, रजत मानक, स्वर्ण विनिमय मानक और कागज़ी मुद्रा)।

इतिहास में एक लंबे समय से राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के प्रलेखन में भारतीय सिक्कों की अहम भूमिका रही है। भारत में पाया गया विदेशी सिक्कों का खजाना प्राचीन काल, मध्ययुगीन और बाद के कोलोनियल-पूर्व युग में रहे भारतीय व्यापार के तरीकों को प्रदर्शित करता है। सिक्कों पर अंकित अवधारणा पर विभिन्न कालावधि के दौरान भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक प्रभुत्व का प्रभाव पड़ा है।

हमारे सिक्कों के पृष्ठों में विभिन्न युगों के भारतीय सिक्कों के नमूनों को दर्शाने का प्रयास किया गया है परंतु इनमें सिक्कों का संपूर्ण इतिहास नहीं समा सकता। हमारा प्रस्ताव है कि हम भविष्य में इन पृष्ठों में और भी जानकारी देंगे। हम आम जन /दर्शकों से सुझावों तथा जानकारी का स्वागत करते हैं।

इन सिक्कों की पहचान के लिए कृपया हमारे पृष्ठों को ब्राउज करें।

प्राचीन भारत के सिक्के

आहत सिक्के

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सिंधु घाटी सभ्यता 2500 ई. और 1750 ई. के बीच की है। तथापि स्थलों की खुदाई में प्राप्त सील (मुहर) क्या वास्तव में सिक्के ही थे, इस बात पर अभी तक सहमति नहीं बन पाई है।

मोहनजोदड़ो की मुहरे

ऐसा माना जाता है कि प्रथम प्रलेखित सिक्कों, जिनमें 'आहत सिक्के' सम्मिलित थे, का जारी किया जाना ई.पू. सातवीं और छठीं शताब्दी के बीच और प्रथम शताब्दी ई. में प्रारंभ हुआ। इन सिक्कों को उनकी निर्माण तकनीक के कारण 'आहत सिक्का'के नाम से जाना जाता है। इनमें से ज्यादातर सिक्के चांदी के बने होते थे तथा उन पर प्रतीक अंकित होते थे। सिक्के पर प्रत्येक प्रतीक अलग से आहत किया जाता था।

आहत सिक्के, चांदी के बेंटबार

ये सिक्के प्रारंभ में व्यापारी संघों और बाद में राज्यों के द्वारा जारी किए जाने लगे। ये सिक्के उस अवधि से संबंधित व्यापारिक करेंसी को प्रदर्शित करते हैं जब व्यापारिक गतिविधियां तथा शहरी विकास शिखर पर थे। इस अवधि को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - प्रथम अवधि (जनपद और छोटे राज्यों से संबंधित) और द्वितीय अवधि(साम्राज्यकीय मौर्यकाल से संबंधित)। इन सिक्कों पर अंकित अवधारणाएं (मोटिफ) अधिकतर प्रकृति अर्थात सूर्य, विभिन्न जानवरों, वृक्षों, पहाड़ों इत्यादि से ग्रहण की गई हैं और कुछ अवधारणाएं ज्यामितीय प्रतीकों से प्राप्त हुई हैं।

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
सात प्रतीक		
पांच प्रतीक		
पांच प्रतीक		

चांदी के आहत सिक्के

आहत सिक्कों पर उभरे प्रातिनिधिक प्रतीक

विवरण	सिक्के
असम का जनपद	
साम्राज्यकीय शृंखला	Imperial, 1st Series
साम्राज्यकीय शृंखला	Imperial, 1st Series
साम्राज्यकीय शृंखला	Imperial, 4th Series

साम्राज्यकीय आहत सिक्के

मौर्यकालीन कला का रूप

राजवंशीय सिक्के

राजवंशीय सिक्कों के निर्गम की तारीखें निर्दिष्ट करना विवादास्पद है। इन सिक्कों में से प्रारंभिक सिक्कों का संबंध इंडो-ग्रीक, शक-पहलवी और कुषाणों से रहा है। इन सिक्कों को आम तौर पर ई.पू.द्वितीय शताब्दी और द्वितीय ईसा (ई.) के बीच चलाया गया। यूनानी परंपरा में इंडो-ग्रीक चांदी के सिक्कों पर ग्रीक देवी और देवताओं के चित्रों को प्रमुखता से अंकित करने के साथ-साथ निर्गमकर्ता के पोर्ट्रेट भी उन पर अंकित किए जाते थे। ग्रीक कृतियों के साथ जारी ये सिक्के ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इंडो-ग्रीक इतिहास की पुनर्रचना लगभग संपूर्णतया इन्हीं प्रमाणों पर आधारित है। पश्चिमी क्षत्रपों के शक काल के सिक्के संभवत: सर्वप्रथम दिनांकित सिक्के रहे हैं। इन सिक्कों पर शक संवत में तारीखें लिखी गई हैं, जिनका प्रारंभ 78 ई. में हुआ था। शक संवत भारतीय गणतंत्र के आधिकारिक कैलेंडर का प्रतिनिधित्व करता है।

इंडो-ग्रीक सिक्के

कुषाण

कुषाण का नक्शा

पूर्व काल के कुषाण सिक्कों को आमतौर पर विमा कडफिसेज से जुड़ा हुआ माना जाता है। कुषाण कालीन सिक्के आम तौर पर ग्रीक, मेसोपोटामिया, जोराष्ट्रियिन और भारतीय माइथोलोजी से ग्रहण किए गए आइकोनोग्राफिक रूपों को प्रदर्शित करता है। शिव, बुद्ध और कार्तिकेय की छवियां प्रमुखतापूर्वक इन सिक्कों पर प्रदर्शित की गई हैं। कुषाण स्वर्ण सिक्कों ने बाद के निर्गमों, मुख्य रूप से गुप्तकाल के निर्गमों को प्रभावित किया।

कुषाणों के सिक्के

कुषाण कला का रूप, कनिष्क का बुत, मथुरा संग्रहालय

सतवाहन

गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच के भू-भाग पर सर्वप्रथम सतवाहन का राज्य था। उन्हें आंध्र भी कहा जाता था। शीघ्र ही उन्होंने पश्चिमी दक्खन और मध्य भारत को अपने नियंत्रण में ले लिया। उनके राज करने की तारीखों पर अभी भी एकमत नहीं हो सका है, तथापि ई.पू.270 और ई.पू.30 के बीच इनका शासन माना जाता है। उनके सिक्के मुख्यतया ताम्र और पारद निर्मित थे। इसके अतिरिक्त चांदी के सिक्के भी जारी किए गए थे। इन सिक्कों पर हाथी, सिंह,

सांड़ और घोड़ों इत्यादि जानवरों की आकृतियां पायी जाती हैं, बल्कि कई बार प्रकृति के प्रतीकों □से-पहाड़ों, वृक्षों इत्यादि की और इनकी आकृति आमने-सामने होती थी। सतवाहन के चांदी के सिक्कों पर चित्र और द्विभाषी उक्तियां उकेरी होती थीं जो क्षत्रप प्रकार से अभिप्रेरित थी।

सतवाहन के सिक्के

पश्चिमी क्षत्रप

पश्□मी क्षत्रप शब्द उन राजाओं के समूह का द्योतक है जिन्होंने प्रथम और चतुर्थ शताब्दी ई.राज किया था। सिक्कों पर उकेरी गई उक्तियां आम तौर पर ग्रीक और ब्राह्मी लिपि में हैं। खरोष्टी का भी प्रयोग किया गया है। पश्चिमी क्षत्रपों के सिक्कों को प्रथम दिनांकित सिक्के भी माना जाता है। आम प्रचलन में रहनेवाले ताम्र सिक्के 'सांड़ और पहाड़' तथा 'हाथी और पहाड़' की चित्रकारी वाले होते थे।

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
रुद्रसिंह I, 180-196 ई.		
वीरदमन, 234-238 ई.		

पश्चिमी क्षत्रपों के सिक्के

अन्य सिक्के

मौर्यवंश के ढहने और गुप्तवंश का उदय होने के अन्तराल में पंजाब के कई जनजातीय गणतंत्र और इंडो-गांगेय मैदानी इलाकों के राजाओं के द्वारा सिक्के जारी किए गए। ज्यादातर सिक्के तांबे के जारी किए गए । यौधेय के सिक्कों पर कुषाणों द्वारा जारी सिक्कों की डिजाइन और अवधारणा का प्रभाव है। इन सिक्कों के मानदंड में इंडो-बैक्ट्रियन के राजाओं का अनुसरण किया जाता था।

यौधेय के सिक्के

गुप्तवंश : गुप्तवंश के सिक्कों (4-6 शताब्दी ई.) में भी कुषाणों की परंपरा की झलक मिलती है, जिसमें मुख भाग पर राजा का चित्र अंकित है और पृष्ठ भाग पर किसी देवी या देवता का चित्र अंकित है; देवी या देवता का चित्र भारतीय होता था तथा लिपि ब्राह्मी होती थी। गुप्तवंश के प्रारंभिक सिक्कों के प्रचलन का श्रेय समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त-II और कुमारगुप्त को □ाता है। ये सिक्के आमतौर पर राजवंश के उत्तराधिकारी की स्मृति में और साथ ही महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे-वैवाहिक समारोह, अश्व बलिदान इत्यादि (रा□ा-रानी प्रकार के चंद्रगुप्त-I के सिक्के, अश्वमेध प्रकार, इत्यादि) सामाजिक-राजनीतिक अथवा ऐसे ही विषयों पर राजकुल के सदस्यों (संगीतकार, धनुर्धर, सिंह-वधिक इत्यादि) की कलात्मक और वैयक्तिक उपलब्धियों पर जारी किए जाते थे।

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
घुड़सवारी की मुद्रा में रा□ा		
सिंह वधिक की मुद्रा में रा□ा		
राजा और रानी प्रकार		

पंख फैलाए हुए मोर		

गुप्त राजाओं के सिक्के

गुप्तवंश के बाद के सिक्के

गुप्तवंश के बाद के सिक्कों (छठवीं और बारहवीं शताब्दी ई.) में राजवंशों के एक ही प्रकार के और कम सौंदर्य बोधवाले सिक्के हैं, जिनमें हर्ष (सातवीं शताब्दी ई., कलाचुरी त्रिपुरी-ग्यारहवीं शताब्दी ई.) और आरंभिक मध्ययुगीन राजपूत राजाओं (नवीं और बारहवीं शताब्दी ई.) की शृंखलाएं सम्मिलित हैं। इस अवधि में स्वर्ण सिक्के यदा-कदा ही जारी हुए । इन स्वर्ण सिक्कों को कलाचुरी के शासक गांगेयदेव, जिन्होंने 'आसनारू़ लक्ष्मी' सिक्के जारी किए थे तथा जिसकी नकल बाद के राजाओं ने स्वर्ण के सिक्कों और संमिश्र रूप में की, ने पुनर्जीवित किया। राजपूत राजाओं द्वारा जारी सिक्कों पर आम तौर पर सांड़ और घुड़सवार के मोटिफ अंकित हुआ करते थे। पश्चिमी भारत में बाइजेंटाइन सोलिदी जैसे सिक्कों का आयात होता था जो अधिकांशतया पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंधों को प्रतीक रूप में दर्शाते थे।

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
आसनारू़लक्ष्मी		
सांड़ और घुड़सवार		

दक्षिण भारतीय सिक्के

जारी किए गए दक्षिण भारतीय सिक्कों पर प्रतीकों और अवधारणाओं (मोटिफ) की चित्रकारी राजवंशों तक ही सीमित थी जैसे-सूअर (□लुक्य), सांड़ (पल्लव), शेर (□ोल), मत्स्य (पांड्या और अलुपा), तीर-धनुष (चेरा) और सिंह (होयसाल) इत्यादि। देवगिरि के यादवों ने सिक्के के मुख भाग और रिक्त रहे पृष्ठ भाग पर अष्टपर्णी कमल के साथ 'पद्मतनक' □ारी किए। सिक्के पर अंकित उक्तियां स्थानीय लिपि और भाषाओं में उनके निर्गमकर्ता के नाम और हकदारी को संदर्भित करती हैं। अलंकरणयुक्त विशेषताएं बहुत ही दुर्लभ सिक्कों में पायी गईं तथा मध्यावधि विजयनगर की अवधि के सिक्कों (चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी ई.) तक देवताओं का लगभग अभाव ही पाया गया।

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
11वीं -13वीं शताब्दी □र के सिक्के		
11वीं -13वीं शताब्दी □र के सिक्के		
9वीं -13वीं शताब्दी □ोल के सिक्के		

11वीं -13वीं शताब्दी उडपी के अलुपा के सिक्के		
पद्मतनक, 12वीं -14वीं शताब्दी देवगिरि के यादवों के सिक्के		

प्राचीन भारत का नक्शा, भारत सरकार के सौजन्य से

भारत में पाए गए विदेशी सिक्कों का खज़ाना

प्राचीन भारत के व्यापारिक संबंध महत्वपूर्ण रूप से मध्य-पूर्व, यूरोप (ग्रीस और रोम) तथा चीन के साथ थे। व्यापार का कुछ भाग भू-मार्ग, जो सिल्क मार्ग के नाम से प्रख्यात था, तथा कुछ भाग जल-मार्ग दोनों से ही किया जाता था। रोमन इतिहासकार प्लिनी के समय भारत के साथ रोमन व्यापार न सिर्फ तेज गति से फल-फूल रहा था बल्कि रोमन साम्राज्य के लिए भुगतान संतुलन की समस्या भी आ खड़ी हुई थी। दक्षिण भारत में, जहाँ समुद्र मार्ग से व्यापार तेज गति से फल-फूल रहा था, रोमन सिक्के मूल रूप में प्रचलन में थे परंतु कभी-कभी वे □र लगे होते थे जो विदेशी साम्राज्य को नकारने का प्रतीक हुआ करता था।

अगस्तस के चीरयुक्त रोमन औरस

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
दक्षिण भारत में पाए गए रोमन सिक्के		
दक्षिण भारत में पाए गए रोमन सिक्के		
दक्षिण भारत में पाए गए बाइजेंटाइन सिक्के		

मध्यकालीन भारतीय सिक्के

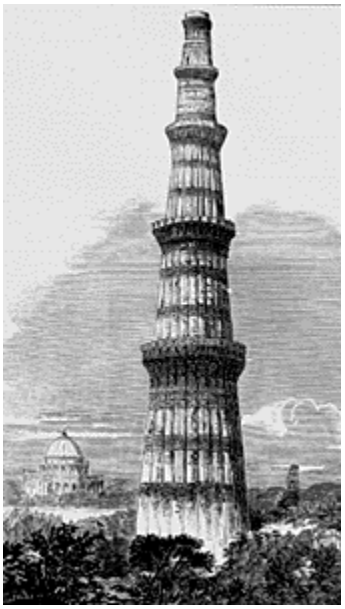

मध्यकालीन भारत का मानचित्र, भारत सरकार के सौजन्य से

अरबों ने 712 ई.में सिंध को फतह किया और खलिफत का सूबा बनाकर इस पर शासन किया। 9 वीं शताब्दी में सूबे के गवर्नरों ने अपना स्वतंत्र शासन स्थापित किया और अपने ही सिक्कों को उन्होंने खारिज़ किया। परंतु 12 वीं शताब्दी में दिल्ली में तुर्की सुल्तानों के आगमन के साथ ही भूतकाल की परंपरा को छोड़ने का निर्णायक मौका आया और सिक्कों पर लिखी विद्यमान अवधारणाओं को क्रमश: हटाकर उनकी जगह इस्लामी विधाओं आम तौर पर लिखावट (कैलिओग्राफी) ने ले ली। लेखा इकाई का समेकन किया गया और इसे 'टंका' नाम दिया गया, जबकि छोटे मूल्यवर्ग के सिक्कों को 'जिट्टल'नाम दिया गया। ऐसा करके (1206-1526 ई.) दिल्ली सल्तनत ने मानकीकरण का प्रयास किया। इस अवधि को इसलिए भी जाना जाता है क्योंकि इस दौरान ही मुद्रा के अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण विस्तार हो गया। सिक्कों की ढलाई स्वर्ण,

रजत और ताम्र धातुओं में की जाती थी। मौद्रिक प्रणाली में स्वर्ण और रजत के बीच का अनुपात संभवतः 1:10 होता था। खिलज़ी शासकों ने विपुल मात्रा में आदर्श अल्फाज़वाले शीर्षकों के साथ सिक्के जारी किए (अला-उद-दिन खिलज़ी ने 'सिकंदर अल सैनी'अलेक्जेंडर द्वितीय खिताब खुद को अता फरमाते हुए सिक्के जारी किए) और साथ ही टकसालों के लिए सम्मानजनक उक्तियां गढ़वाईं (दिल्ली टकसाल के सिक्के 'हज़रत-दर-अल-खिलाफ़त, जैसे खिताबों से सजे थे')।

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
1246 - 1266 ई. नसीरुद्दीन महमूद का सिक्का		
1266 - 1287 ई. गियासुद्दीन बलबान का सिक्का		

दिल्ली सल्तनत के सिक्के

खिलज़ी शासकों के सिक्के

तुगलक शासकों के सिक्के(1320-1412 ई.) डिजाइन और प्रचलन में खिलज़ी शासकों के सिक्कों से भी कहीं अधिक उत्कृष्ट थे। मोहम्मद बिन

तुगलक (1325-1351 ई.) ने भी सिक्कों में अपनी दिलचस्पी दिखाई परंतु उसके मौद्रिक प्रयोग बेकार और कंगाल बनानेवाले साबित हुए। पहले प्रयोग में उसके सिक्कों में मुक्त बाजार में प्रचलित स्वर्ण/रजत मूल्य अनुपात की □ की थी। इस प्रयोग के असफल हो जाने पर पुराने स्वर्ण और रजत के लगभग 11 ग्रामवाले सिक्के पुन: प्रचलित किए गए। अगला प्रयोग चीन की काग□-मुद्रा से प्रेरित था, जिसने व्यापार और वाणिज्य के विकास को आगे धकेला। तुगलक ने 1329 से 1332 ई. के बीच सिक्कों की न्यास प्रणाली (फिड्यूसिअरी सिस्टम) स्थापित करने का प्रयास भी किया। उसने पीतल और ताम्र के टोकन भी जारी करने का काम किया। इन टोकनों पर -'पचास गनी के टंका रूप में सीलबंद' के साथ-साथ 'जो सुल्तान का हुक्म बजाता है वह नियामत बख्से जाने का हकदार है'- जैसी उक्तियां उद्धृत की हुई थीं। तमाम धांधलियों और जालसाजियों के कारण यह प्रयोग नेस्तनाबूत हो गया और इतिहास में तुगलक को इस बात का श्रेय दिया जाता है कि उसने सभी टोकनों, फर्ज़ी अथवा असली जो भी हों, के मूल्य का भुगतान किया। यह ध्यान देने योग्य है कि तुगलक के सभी प्रयोग वास्तविक थे : जनता को इन सिक्कों को स्वीकार करने के लिए बाध्य तो किया गया परंतु ऐसा नहीं था कि उन पर तानाशाही करने के लिए खजाने में रोकड़ा नहीं था। मोहम्मद बिन तुगलक के शासन के दौरान स्वर्ण सिक्के बहुत बड़ी मात्रा में जारी किए गए परंतु इसके बाद स्वर्ण सिक्के मिलने दुर्लभ हो गए। लोधी के शासन में लगभग सभी सिक्के ताम्र और बिलॉन मात्र के निर्मित होते थे। सूबों में बंगाल के सुल्तान, जौनपुर के सुल्तान, दक्खन के बहमनी शासकों, मालवा के सुल्तान, गुजरात के सुल्तान, आदि ने सिक्कों की ढलाई करवाई। तथापि दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य ने भिन्न-भिन्न मेट्रोलॉजी और डिजाइन के सिक्कों को प्रचलित किया जो प्रांत में मानक माना जाता रहा और 19 वीं शताब्दी तक सिक्कों की डिजाइनों को प्रभावित करता आया।

मालवा के रजत सिक्के

विजयनगर साम्राज्य

दक्षिण में दिल्ली सल्तनत और मुगलों के समकालीन विजयनगर अन्य ऐसा रा□वंश था जिनकी मुद्रा मानकीकृत निर्गम का सर्वाधिक दुर्लभ उदाहरण प्रस्तुत करती थी तथा जो बाद में यूरोपियन और इंग्लिश ट्रेडिंग कंपनियों के लिए आदर्श बनीं। विजयनगर राज्य की स्थापना दक्षिण में कृष्णा नदी के निकटवर्ती क्षेत्र में हरिहर और बुक्क द्वारा लगभग 1336 ई.के आस-पास की गई थी। विजयनगर का काल यूरोपियन व्यापारियों के आगमन, विशेषरूप से पुर्तगालियों, का गवाह रहा है। कृष्णदेवराय ने विदेश व्यापार को बढ़ावा दिया जिसके कारण मुद्रा की अधिकाधिक आवश्यकता होती गई। विजयनगर साम्राज्य के सिक्के ज्यादातर स्वर्ण और ताम्र में ढले होते थे। विजयनगर के अधिकतर सिक्कों के मुख भाग पर कोई उपास्य प्रतिमा छपी होती थी तथा पृष्ठ भाग पर राजकीय उक्ति गढ़ी होती थी। विजयनगर साम्राज्य के महत्वपूर्ण स्वर्ण सिक्कों में वे सिक्के जिन पर तिरु पति भगवान वेंकटेश्वर की प्रतिमा उकेरी गई होती थी,एकल रूप को अथवा उनकी दोनों पत्नियों के साथ युगल रूप को प्रतिबिंबित करते थे। इन सिक्कों ने डच और फ्रेंच के 'एकल स्वामी' पगोडा तथा इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के 'त्रि-स्वामी' पगोडा को अभिप्रेरित किया।

विजयनगर साम्राज्यके सिक्के

विजयनगर साम्राज्य के सिक्कों की अभिप्रेरणा से निर्मित पगोडा, ईस्ट इंडिया कंपनी

मुगलकालके सिक्के

तकनीकी रूप से देखा जाए तो भारत में मुगलकाल का आरंभ 1526 ई. में हुआ जब बाबर ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोधी को हराया तथा 1857 ई. में इसका अंत तब हुआ जब सबसे बड़ी क्रांति के पश्चात अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफ़र को ब्रिटिश ने गद्दी से हटा दिया और देश निकाला कर दिया। शाह आलम-II के बाद के बादशाह केवल नाममात्र के बादशाह रह गए थे।

मुगलों का सर्वाधिक बड़ा योगदान था पूरे साम्राज्य में सिक्कों की प्रणाली में एकरूपता और समेकन लाना। यह प्रणाली मुगलों के पूरी तरह समाप्त होने के बाद लंबे समय तक अमल में रही। तीन धातुओं की प्रणाली, जिसके कारण मुगलकाल के सिक्कों की पहचान बनी,मुख्य रू प से शेर शाह सूरी (1540 से 1545 ई.), जो अफगानी था और जिसने दिल्ली पर अल्पकाल के लिए शासन किया, की देन थी न कि मुगलों की। शेर शाह ने चांदी का सिक्का जारी किया जिसका नाम था रु पया। इसका वजन 178 ग्रेन था और यह आधुनिक रु पया का जनक था। यह 20 वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक उसी रूप में प्रचलन में रहा। चांदी के रु पए के साथ ही स्वर्ण सिक्के भी जारी किए गए,जिन्हें मुहर के नाम से जाना जाता था और जिनका वजन 169 ग्रेन था तथा ताम्र के सिक्के भी जारी किए गए जिन्हें दाम नाम से जाना जाता था।

सिक्कों की डिजाइन और उनकी ढलाई की बात जब भी आती है, मुगलकालीन सिक्कों में मूल डिजाइन और नवोन्मेषी प्रतिभा की झलक पाई □ाती है। मुगलकाल के सिक्कों में परिपक्वता अकबर महान के शासनकाल में आई। डाइ पर फूलपत्तियों के अलंकरणों की सजावटवाली पृष्ठभूमि लाने जैसे नवोन्मेषी कार्य प्रारंभ किए गए। जहाँगीर ने अपने सिक्कों में व्यक्तिगत रु □ली थी। प्रचलन में ब□रहे बड़े आकारवाले ये सिक्के विश्व में जारी किए गए सिक्कों में सर्वाधिक थे। राशि□क्र से संबंधित चिह्न, चित्र और साहित्यिक उक्तियां और उत्कृष्ट प्रकार की लिखावट, जो उसके सिक्कों की विशेष पहचान बन चुके थे, के कारण मुगलकाल के सिक्कों ने नई ऊँचाइयां प्राप्त कीं।

मुगल साम्राज्य के सिक्के

	मुहर - हुमायूं
	एक रु पया- शेर शाह सूरी(अफगान)
	मुहर - अकबर

		मुहर - औरंगजेब

मुहर -
फरुख्शियर

शाहजहाँ के प्रारंभिक शासनकाल में सिक्कों के विभिन्न प्रकारों की सर्वाधिक बड़ी शृंखला बनी; सिक्कों की डिजाइन में मानकीकरण उसके शासन के उत्तरार्द्ध में आया। मुगल साम्राज्य का अंतिम बादशाह औरंगजेब अपने तौर-तरीकों को लेकर हठी था और अपने पुरातनवादी विचारों का कायल था। उसने कलीमा,जो इस्लामी मत का लेख था, को अपने सिक्कों से हटवा दिया तथा सिक्कों के फॉर्मेट को इस प्रकार मानकीकृत किया कि उनमें शासक का नाम, टकसाल का नाम और उसे जारी करने की तारीख लिखी जाने लगी।

ऑपनिवेश से पहले का भारत और रियासती रा□यों के समय के सिक्के

औरंगजेब की मृत्यु के बाद से ही मुगल साम्राज्य के पतन की शुरुआत हो गई। मराठों की सामरिक सफलता को देखकर थोड़े समय के लिए ऐसा प्रतीत हुआ कि मुगलों के कूच करने से उपजे शून्य को वे भरेंगे। परंतु ऐसा नहीं हुआ। एक अराजकता की स्थिति पैदा हो गई और ऐसे में क्षेत्रीय शक्तियों में अपना वर्चस्व पुन: प्राप्त करने की होड़ लग गई और जिन राज्यों का वर्चस्व बीते समय में कभी रहा था, उनमें से कई राज्य □ा मध्यकाल में स्वतंत्र भी थे, □ासे- राजपूताना, वे राज्य पुन: अस्तित्व में आ गए। केंद्रीय सत्ता के कमज़ोर पड़ने के कारण मुगलों के सूबों के सूबेदारों में स्वतंत्र राज्य कायम (अवध और हैदराबाद रा□य) करने की हिम्मत बढ़ी। अस्थिरता के माहौल के कारण सैनिकी दुस्साहस के कारनामों की घटनाएं होने लगीं जिनमें सैन्यशक्ति के बूते पर राजाओं ने स्वयं के लिए राज्य अलग कर लिए यथा-सिंधिया (ग्वालियर), और हैदरअली (मैसूर) राज्य। अंत में 'सहूलियतवाले राज्य' - नाममात्र के राज्य हो गए जिनके राजवंश को ब्रिटिश (□ासे-वडियार) का समर्थन था अथवा वे उच्च राजनीति के हित में क्षेत्रीय क्षत्रप बने हुए थे। जब ब्रिटिश क्राउन ने 1858 में ईस्ट इंडिया कंपनी से देश की बागडोर अपने हाथ में ली तब उस समय पूरे देश में सौ से भी अधिक रा□-रजवाड़े थे जो मुगल बादशाह के नाम में सिक्के जारी कर रहे थे। अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह को देश निकाला देकर रंगून भेज दिए जाने के पश्चात क्षेत्रीय राजाओं ने अपने सिक्कों पर से मुगलकाल से संबंधित इबारतों को हटाकर उसकी जगह इंग्लैंड की रानी का नाम अथवा उनका चित्र ढालना शुरू किया जो इस बात की स्वीकारोक्ति थी कि उन्होंने

ब्रिटिश हुकूमत स्वीकार कर ली है। कुछ सिक्के जैसे मेवाड़ के सिक्कों पर 'दोस्ती लंदन' अर्थात् 'लंदन के दोस्त' खुदा हुआ पाया गया। ब्रिटिश हुकूमत ने बाद में धीरे-धीरे देशी राज्यों के स्वयं के सिक्केजारी करने के अधिकारों को खत्म कर दिया। कुछ राज्यों के प्रातिनिधिक सिक्कों को नीचे दर्शाया गया है।

मराठा राज्य संघ

यद्यपि मराठों का एक लंबा इतिहास है, तथापि उन्होंने युगप्रवर्तक नेता शिवाजी के नेतृत्व में सत्रहवीं शताब्दी में अपना झंडा गाड़ा। मराठा राज्य संघ ने 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद अपने आपको एकजुट कर मजबूत किया।उनकी सैन्य सफलताओं के चलते 1738 ई.तक भारत का अधिकांश भाग उनके आधिपत्य में आ चुका था। भारत में केवल मराठा शक्ति ही बादशाही हुकूमत को टक्कर देकर भारतीय साम्राज्य की स्थापना कर सकती थी। परंतु उन्हें 1761 ई.में पानीपत के युद्ध में मुंह की खानी पड़ी। तथापि उन्होंने शताब्दी के अंत तक अपना वर्चस्व दक्खन में बनाए रखा। केंद्र की सत्ता के खात्मे के साथ ही मराठा परिवारों ने बड़ौदा,ग्वालियर,इंदौर, आदि राज्यों की स्थापना की। 1674 ई. में रायगढ में जब शिवाजी का राज्याभिषेक कर उन्हें राजा की उपाधि से अलंकृत किया गया तब इस राज्याभिषेक के स्मरणार्थ स्मारकीय सिक्के पुन: जारी किए गए। ये सिक्के दुर्लभ हैं। मराठा टकसालों और सिक्कों ने लगभग 18वीं सदी के मध्य अपनी स्थिति मज़बूत बना ली। इस अवधि के दौरान तीन प्रकार के सिक्के प्रचलन में रहे थे जिनके नाम हैं-हाली सिक्का, अंकुशी रु पया जो पुणे का मानक रु पया था, और चंदेरी रुपया जो अंकुशी के सममूल्य था।

मराठों के सिक्के

ताम्र		
ताम्र		

चांदी, पुणे टकसाल		
चांदी, पुणे टकसाल		

अवध

1720 ई.के आस-पास उत्तर भारत में अवध राज्य पर मुगलों की ओर से नवाब-वज़ीरों ने शासन किया। मुगल साम्राज्य के अस्त के बाद मार्क्वीस ऑफ हेस्टिंग्स ने गाज़ीउद्दीन हैदर को, जो अवध के नवाब-वज़ीर थे, मुगल आधिपत्य से अलग करने और खुद को स्वतंत्र घोषित करने के लिए मनाया। गाज़ीउद्दीन हैदर का राजतिलक 1819 में हुआ परंतु इतिहास गवाह है कि अवध का राज्य, जिसकी राजधानी लखनऊ थी और जो भारत की सांस्कृतिक राजधानी होने का दावा करती थी, चार दशकों तक भी ब□□या न □ा सका। गाज़ीउद्दीन के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति की घोषणा करने के बावजूद स्वतंत्र रूप से □ारी सिक्के का प्रथम निर्गम मुगल साम्राज्य के नाम से ही था, जिसके पृष्ठ भाग पर असलहों की अवध चित्रकारी थी। असलहों के चित्र इंग्लिश की नकल थे और परंपरागत मुगल डिज़ाइन का परित्याग किया जाना इनमें साफ दिखाई दे रहा था। गाज़ीउद्दीन के बाद एक के बाद एक नसीरु द्दीन हैदर, मुहम्मद अली, और वाज़िद अली ने गद्दी संभाली। मौद्रिक प्रणाली में स्वर्ण अशर्फ़ी (आधी,चौथाई,और अशर्फ़ी का एक बटा आठ तथा एक बटा सोलह), पांच मूल्यवर्गों में चांदी का रुपया और ताम्र फूलस प्रचलन में थे। बक्सर (1764) में अवध के नवाब की हार के बाद से अवध राज्य का सूर्यास्त होना प्रारंभ हुआ। वाज़िद अली शाह, अंतिम नवाब को 1856 में लॉर्ड डलहौजी ने सत्ता छोड़ने के लिए मज़बूर किया। 1857 की क्रांति के दौरान लखनऊ में लड़ी गई जंग सर्वाधिक खूंखार जंग थी। कहा जाता है कि क्रांतिकारियों ने नवाब-वज़ारत के नाम के सिक्केजारी किए थे।

अवध के सिक्के

मैसूर

मैसूर राज्य भारत के दक्षिण-पश्चिम में स्थापित था और विभिन्न हिंदू राजाओं ने इस पर शासन किया। 1761 में हैदर अली, जो सैन्य दुस्साहस दिखाया करता था, ने वडियार राजा को बेदखल कर स्वयं को राजा घोषित किया। इस क्षेत्र में *मुगल और विजयनगर* दोनों के ही मानक सिक्के प्रचलन में रहे थे। उसके द्वारा जारी सिक्कों में पगोडा प्रकार के सिक्केही चलन में रहे (अर्थात हर-गौरी) जिस पर उसके आद्यक्षर होते थे तथा पृष्ठ भाग पर 'ही'अक्षर खुदा होता था। उसके बेटे टीपू ने बाद में गद्दी संभाली और खुद को सुल्तान घोषित किया। उसने पगोडा, मुहर को जारी रखते हुए अपने सिक्कों में तमाम नवोन्मेषी और नायाब प्रयोग किए तथा स्वयं के मानकों का प्रचलन किया। उसके सिक्कों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें कहीं भी उसके नाम का उल्लेख नहीं है। टीपू सुल्तान,जो प्रगतिशील शासक था, उन मुट्ठी भर राजाओं में से था जिसने ब्रिटिश के साम्राज्यवादी नज़रिए को भांपा और उनका डटकर विरोध किया। परंतु 1799 में श्रीरंगपट्टणम के युद्ध में वह मारा गया जिसके बाद ब्रिटिश ने कृष्णराज वडियार को पुन: मैसूर राज्य का राजा बना दिया। कृष्णराज वडियार ने विजयनगर और मुगल मानकों के सिक्केजारी रखे। स्वर्ण सिक्कों पर हर-गौरी रूपांकन तथा पृष्ठ भाग पर राजा का नाम छापना जारी रखा गया। चांदी के सिक्के मुगल परंपरा में थे जिसके मुखभाग पर मुगल शासक शाह आलम II का नाम और पृष्ठ भाग पर टकसाल का नाम होता था। कुछ छोटे मूल्य के सिक्कों पर वडियार परिवार की कुलदेवी चामुंडा की छवि भी उकेरी □ाती थी;

अन्य सिक्कों पर प्रकृति के रूपांकन और समय-समय पर नागरी, फारसी, कन्नड़, और अंग्रेजी भाषाओं में मुद्रा-लेख उकेरे जाते थे।

हैदरअली के सिक्के

टीपू सुल्तान का रुपया

सिक्खों के सिक्के

गुरु नानक ने धार्मिक समुदाय की स्थापना की थी जो कालान्तर में सिक्ख साम्राज्य बनकर उत्तर-पश्चिम भारत में शक्तिशाली सामरिक शक्ति के रूप में उभरा। यह परिवर्तन लगातार चले आ रहे मुगल अत्याचारों के कारण हुआ। सिक्खों के इस्लाम कबूल न करने के कारण मुगल सत्ताधारकों द्वारा लगातार उन्हें यातनाएं दी जाती रहीं जिसके कारण सिक्ख सैनिक शक्ति उभर कर सामने आई। तथापि 1710 में सरहिंद सूबे में अहमदशाह दुर्रानी की हार के बाद सिक्ख लीग, जिसे खालसा के नाम से भी जाना जाता है, ने स्वतंत्र रूप से अपना आधिपत्य कायम किया। झेलम और सतलज के बीच का संपूर्ण भू-भाग सिक्ख सरदारों के कब्ज़े में आ चुका था। 1777 ई. में अमृतसर में सिक्के जारी हुए जिन पर मुगल बादशाह का नाम नदारद था और इन्हें 'नानकशाही' नाम से जाना जाता था। इन सिक्कों पर गुरु गोबिंद सिंह का नाम लिखा था जो सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरू थे। सिक्ख सरदारों में सर्वाधिक विलक्षण राजनीतिज्ञ का नाम था रणजीत सिंह जिन्होंने सफलतापूर्वक अमृतसर, लुधियाना, मुल्तान, कश्मीर और पेशावर पर फिर से अपना कब्ज़ा जमाया। 1809 में ब्रिटिश हुकूमत के साथ की गई संधि में यह पुष्टि की गई है कि

सतलज के दक्षिण भाग, जिसे रणजीत सिंह ने फतह किया था,पर रणजीत सिंह का ही शासन रहेगा। परंतु उनकी मृत्यु के बाद सिक्ख साम्राज्य का पतन होना शुरू हो गया और अंततः 1849 में उसका विलय ब्रिटिश साम्राज्य के साथ हो गया। रणजीत सिंह के शासनकाल में ढाले गए अधिकांश सिक्कों में एक ओर लंबी पत्ती होती थी और दूसरी ओर फारसी इबारत लिखी होती थी। उन्होंने गुरु मुखी में लिखी इबारतवाले सिक्के भी चलाए जिनमें से अधिकांश ताम्र सिक्के थे।

सिक्खों के सिक्के

हैदराबाद

नवाबी राज्य हैदराबाद की स्थापना लगभग 1724 ई. में तब हुई जब मीर कमरु द्दीन, दक्खन का मुगल वज़ीर, ने असफ जहाँ की उपाधि लेकर स्वतंत्रता प्राप्त कर ली और निज़ाम हैदराबाद शासन की स्थापना की। 1857 के बाद के इतिहास में जितने भी रियासती राज्य थे उनमें सर्वाधिक बड़ा राज्य था हैदराबाद, जिसे बाद में 'परम महामहिम निज़ाम का स्वतंत्र उपनिवेश' के नाम से जाना गया। उनकी सल्तनत में आज के आंध्र-प्रदेश,महाराष्ट्र,और कर्नाटक

के क्षेत्रों का समावेश था, जिन्हें सितंबर 1948 में भारतीय संघ में मिला लिया गया। करेंसी और सिक्कों के मामले में 1858 तक निज़ाम के सिक्केमुगल बादशाह के नाम में जारी किए जाते रहे जिन पर उसके संस्थापक असफ़ जहां के नाम की इबारत लिखी जाती थी। इसके बाद इन सिक्कों की ढलाई स्वतंत्र रूप से की जानी लगी और नए सिक्कों को 'हाली सिक्का' नाम दिया गया अर्थात प्रचलित सिक्के। 1903-04 में पहली बार सिक्कों की ढलाई मशीन से शुरू हुई। इन सिक्कों पर मुख भाग में अंकित चार मी़नार के साथ चारों ओर फारसी लिखावट में निज़ाम-उल-मुल्क बहादुर असफ़ जहां लिखा होता था। पृष्ठ भाग पर मूल्य लिखा होता था। ये सिक्के मूल्यवर्गों और धातुओं के संदर्भ में ब्रिटिश सिक्कों के समकक्ष होते थे।

हैदराबाद के सिक्के

विवरण	मुखभाग	पृष्ठ भाग
अशर्फ़ी		
रुपया		
8 आना		

4 आना		
2 आना		

कुछ अन्य रा□-रजवाड़ों के सिक्के

दतिया राज्य के सिक्के

फरीदकोट राज्य के सिक्के

उदयपुर के सिक्के

विवरण	मुखभाग	पृष्ठ भाग
रुपया		
आधा रुपया		
चौथाई रुपया		
एक बटा आठ रुपया		
एक बटा सोलह रुपया		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के

भारत में अंग्रेजों द्वारा प्रारंभ में किए गए अधिवास को मुख्यतया तीन बड़े समूहों में बांटा जा सकता है: पश्चिम भारत (मुंबई और सूरत), दक्षिण भारत (मद्रास) और बंगाल का पूर्वी प्रांत (कलकत्ता)। पहले के इंग्लिश सिक्कों को व्यापार के लिए स्थानीय रूप से मान्य सिक्कों के अनुरूप तीन ब्रॉड स्ट्रैंड के साथ-साथ निर्मित किया गया।

बंगाल में सिक्कों का विकास मुगल पैटर्न से हुआ,मद्रास में सिक्कों की ढलाई डिजाइन और मेट्रोलॉजी (पगोडा) दोनों ही दक्षिण भारतीय परंपरा के अनुरूप हुई। पश्चिम भारत में इंग्लिश सिक्कों का विकास मुगल और इंग्लिश दोनों ही तरीकों से हुआ। इंग्लिश ने सम्राट फरुख्शियर से 1717 ई. में बॉम्बे मिंट में मुगल सिक्कों की ढलाई करने की अनुमति मांगी। इंग्लिश तरीके के सिक्कों की ढलाई बॉम्बे मिंट में की गई। स्वर्ण सिक्कों को *केरोलिना*, चांदी के सिक्कों को *एंजलिना*, ताम्र सिक्कों को *कपेरून* और जस्ते के सिक्कों को *टिनी* नाम दिया गया। 1830 के आरंभिक काल तक इंग्लिश हुकूमत भारत में अपने पैर पूरी तरह जमा चुकी थी। सैकड़ों वर्षों से चली आ रही उठापटक के बाद उभरकर आई सार्वभौम शक्ति ने सिक्का ढलाई अधिनियम 1835 को अधिनियमित करने और ढलाई कर जारी किए जानेवाले सिक्कों में एकरूपता लाने को संभव किया।

नई डिजाइनवाले सिक्कों, जिनके मुखभाग पर विल्यम चतुर्थ का चित्र और पृष्ठ भाग पर अंग्रेजी और फारसी भाषा में उसका मूल्य लिखा होता था, को 1835 में जारी किया गया।

1840 के बाद जारी सिक्कों पर महारानी विक्टोरिया का चित्र हुआ करता था। रा□ी के नाम में पहले सिक्के 1862 में जारी हुए थे और महारानी विक्टोरिया ने 1877 में भारत की साम्राज्ञी की उपाधि प्राप्त की। महारानी विक्टोरिया के बाद एडवर्ड VII ने सत्ता संभाली और बाद में जारी हुए सिक्कों में उसका चित्र हुआ करता था। भारतीय सिक्का अधिनियम, 1906 पारित हुआ जिसके द्वारा टकसालों की स्थापना तथा भविष्य में जारी किए जानेवाले सिक्कों और प्रचलन में रखे जानेवाले मानकों को शासित किया जाता था (रुपया 180 ग्रेन ; रजत 916.66 मानक; आधा रुपया 90 ग्रेन,चौथाई रुपया 45 ग्रेन)।एडवर्ड VII के बाद जॉर्ज V ने शासन संभाला। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण चांदी का भारी संकट छा गया था, जिसके कारण

ब्रिटिश सरकार को एक रु पया और ढाई रु पए के कागज़ी नोट छापने के लिए विवश होना पड़ा। छोटे मूल्यवर्ग के चांदी के सिक्कों को तांबा-निकेल धातु में जारी किया गया। समय आने पर जॉर्ज V का उत्तराधिकारी एडवर्ड VIII हो गया। तथापि उसके लघु शासनकाल में कोई भी सिक्का जारी नहीं हुआ। 1936 में जॉर्ज VI राजसिंहासन पर आसीन हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध से उपजी विवशता ने सिक्कों में विभिन्न प्रकार के प्रयोगों को अंजाम दिया जिसके तहत मानक रु पया की जगह "चौकोन रजत मिश्र धातु के सिक्के" आ गए। चौकोर रजत सिक्के 1940 से जारी हुए थे। 1947 में इनकी जगह शुद्ध निकेल के सिक्कों ने ले ली।

भारत ने 15 अगस्त 1947 में आज़ादी पाई। तथापि प्रचलित सिक्के ही अवरुद्ध शृंखला के रू प में 26 जनवरी 1950 तक,जब भारत एक गणतंत्र बना, जारी होते रहे।

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के- प्रारम्भिक सिक्के

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
मुर्शिदाबाद टकसाल में शाह आलम II की मुहर अंकित की गई		
मद्रास प्रेसीडेंसी में दो पगोड़ा का प्रचलन		

सूरत रुपया		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के - विल्यम IVके सिक्के

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक रुपया चांदी		
आधा रुपया, चांदी		
चौथाई रुपया, चांदी		

आधा आना, ताम्र		
चौथाई आना, ताम्र		
आधा पैसा, ताम्र		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के- रानी विक्टोरिया के सिक्के (युवा अर्धप्रतिमा)

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
दो आना , चांदी		
चौथाई रु पया, चांदी		

आधा रुपया, चांदी		
एक रु पया चांदी		

एक मुहर		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के- रानी विक्टोरिया के सिक्के (प्रौढ़ा अर्धप्रतिमा)

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक बटा बारह आना, कांस्य		

आधा पैसा, कांस्य		
चौथाई आना, कांस्य		
आधा आना, कांस्य		
दो आना, चांदी		
चौथाई रुपया, चांदी		

आधा रुपया, चांदी		
एक रुपया, चांदी		
एक मुहर		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के- रानी विक्टोरिया के सिक्के (सम्राज्ञी)

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक बटा बारह आना, कांस्य		

आधा पैसा, कांस्य		
चौथाई आना, कांस्य		
आधा आना, कांस्य		
दो आना, चांदी		
चौथाई रु पया, चांदी		

आधा रुपया, चांदी		
एक रु पया, चांदी		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के- एडवर्ड VIIके सिक्के

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक बटा बारह आना, ब्रांझ		
आधा पैसा, कांस्य		
चौथाई आना, कांस्य		

एक आना, ताम्र-निकेल		
दो आना, चांदी		
चौथाई रुपया, चांदी		
आधा रुपया, चांदी		
एक रु पया, चांदी		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के - [illegible] V के सिक्के

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक बटा बारह आना (एक पाई)		
आधा पैसा		
चौथाई आना (1 पैसा)		
एक आना		
दो आना		

चौथाई रु पया		
आधा रुपया		
एक रु पया		
पंद्रह रुपया		

मुख्य रुपरेखा परिवर्तन

दो आना		

चार आना		
आठ आना		

ब्रिटिश इंडिया के सिक्के- [illegible] VI के सिक्के

विवरण	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक बटा बारह आना (एक पाई)		
आधा पैसा		
चौथाई आना (एक पैसा)		

आधा आना		
एक आना		
दो आना		
चौथाई रुपया		
आधा रुपया		
एक रुपया, चांदी		

मुख्य रुपरेखा परिवर्तन

एक पाई		
एक रुपया, चौथाई		
एक रुपया, निकेल		

भारतीय गणतंत्रके सिक्के

भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की। संक्रमण की अवधि के दौरान भारत ने पूर्ववर्ती समय की मुद्रा प्रणाली और मुद्रा एवं सिक्कों को जारी रखा। जहां पाकिस्तान ने सिक्कों की नई शृंखलाएं 1948 में और नोटों की शृंखालाएं 1949 में शुरु कीं वहीं भारत ने अपने विशेष सिक्के 15 अगस्त 1950 को जारी किए।

कालक्रमानुसार भारतीय गणतंत्र की सिक्का निर्माण नीति पर प्रभाव डालनेवाले मुख्य विचार निम्नानुसार हैं :

- स्वतंत्रता के संदर्भ में संप्रभुता के प्रतीकों और देशी अवधारणाओं को शामिल करना;
- मेट्रिक प्रणाली को लागू करते हुए सिक्का निर्माण में सुधार;
- समय-समय पर यह आवश्यकता महसूस की गई कि सिक्कों की धातु का मूल्य उसके अंकित मूल्य से अधिक न ब□पाए ;
- मुद्रा नोटों को सिक्का रू प में जारी करने के लागत -लाभ।

स्वतंत्र भारत के निर्गमों को मोटे रू प से निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है :

अवरुद्ध शृंखला 1947-1950

यह भारतीय गणतंत्र की स्थापना होने तक के संक्रमणकाल के दौरान की मुद्रा व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करती है। 192 पाइ वाले एक रु पए की मुद्रा प्रणाली अपरिवर्तित रही।

1 रु पया	=	16 आना
1 आना	=	4 पैसा
1 पैसा	=	3 पाइ

आना शृंखला

यह शृंखला 15 अगस्त 1950 को शुरु की गई और इसने भारतीय गणतंत्र के प्रथम सिक्का निर्माण का प्रतिनिधित्व किया। राजा के चित्र को हटाकर उसकी □गह शौर्य के प्रतीक अशोक स्तंभ के सिंह की आकृति उकेरी गई। एक रु पए के सिक्केपर बाघ की जगह मक्के की बालियों ने ले लीं। एक तरह से इसने प्रगति और उन्नति पर ध्यान केंद्रित करने के बदलाव का प्रतिनिधित्व किया। अन्य सिक्कों पर भारतीय अवधारणाओं को शामिल किया गया। मौद्रिक प्रणाली आम तौर पर अपरिवर्तित रही जिसमें 16 आने का एक रु पया होता था।

मूल्य वर्ग	धातु	मुख भाग	पृष्ठ भाग
एक रुपया	निकेल		
आधा रुपया	निकेल		
चौथाई रुपया	निकेल		

दो आना	ताम्र-निकेल		
एक आना	ताम्र-निकेल		
आधा आना	ताम्र-निकेल		
एक पैसा	कांस्य		

दशमलव शृंखला

एक शताब्दी तक दशमलवकरण अभियान जारी रहा। तथापि सितंबर 1955 में भारतीय सिक्का ढलाई अधिनियम में संशोधन किया गया, ताकि देश में सिक्का निर्माण के लिए मेट्रिक प्रणाली को स्वीकार किया □ा सके। यह अधिनियम 1 अप्रैल 1957 से लागू किया गया। रु पए के मूल्य और नाम में कोई परिर्वतन नहीं किया गया। तथापि, इसे 16 आना अथवा 64 पैसे के स्थान पर 100 पैसे में

विभाजित किया गया। नया दशमलव पैसा सार्वजनिक स्वीकार्यता के लिए 1 जून 1964 तक 'नया पैसा' कहा जाता था परंतु इस तारीख के बाद 'नया' शब्द हटा दिया गया।

नया पैसा शृंखला 1957-1964

मूल्य वर्ग	धातु भार आकार माप	सिक्के
एक रुपया	निकेल 10 ग्राम वृत्ताकार 28 मिमी.	
पचास नये पैसे	निकेल 5 ग्राम वृत्ताकार 24 मिमी.	
पचीस नये पैसे	निकेल 2.5 ग्राम वृत्ताकार 19 मिमी.	

दस नये पैसे	ताम्र-निकेल 5 ग्राम आठ मेहराबवाला 23 मिमी. (सभी मेहरबों को मिलाकर)	
पांच नये पैसे	ताम्र-निकेल 4 ग्राम वर्गाकार 22 मिमी. (□रों कोनों को मिलाकर)	
दो नये पैसे	ताम्र-निकेल 3 ग्राम आठ मेहराबवाला 18 मिमी (सभी मेहरबों को मिलाकर)	
एक नये पैसे	कांस्य 1.5 ग्राम वृत्ताकार 16 मिमी.	

साठ के दशक में वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि के साथ छोटे मूल्यवर्ग के सिक्के □ कांस्य, निकेल-पीतल, ताम्र-निकेल और एल्यूमिनियम-कांस्य में ढाले जाते थे क्रमशः एल्यूमिनियम में □ले जाने लगे। यह परिवर्तन 3 पैसे के नए षट्कोणीय सिक्कों को लागू करने के साथ शुरु हुआ। वर्ष 1968 में बीस पैसे का एक सिक्का जारी किया गया लेकिन इसे अधिक लोकप्रियता हासिल नहीं हुई।

एल्यूमिनियम शृंखला 1964 से आगे

मूल्य वर्ग	धातु भार आकार माप	सिक्के
एक पैसा	एल्यूमिनियम मैग्नेशियम 0.75 ग्राम वर्गाकार 17 मिमी. (कर्ण)	
दो पैसा	एल्यूमिनियम मैग्नेशियम 1 ग्राम मेहराबवाला 20 मिमी. (सभी मेहराबों को मिलाकर)	
तीन पैसा	एल्यूमिनियम मैग्नेशियम 1.25 ग्राम षट्कोणीय 21 मिमी. (कर्ण)	
पांच पैसा	एल्यूमिनियम मैग्नेशियम 1.5 ग्राम वर्गाकार 22 मिमी. (कर्ण)	

दस पैसा	एल्यूमिनियम मैग्नेशियम 2.3 ग्राम मेहराबवाला 26 मिमी. ((सभी मेहराबों को मिलाकर)	
बीस पैसा	एल्यूमिनियम मैग्नेशियम 2.2 ग्राम षट्कोणीय 26 मिमी. (कर्ण) 24.5 मिमी (सभी फलकों को मिलाकर)	

वर्षों बाद लागत-लाभ को ध्यान में रखकर 1, 2 और 3 पैसे के सिक्कों को क्रमश: सत्तर के दशक में बंद कर दिया गया तथा 10, 25 और 50 पैसे के स्टेनलेस स्टील के सिक्केवर्ष 1988 में और एक रुपया के सिक्के वर्ष 1992 में जारी किए गए। नोटों के निर्गम की लागत के कारण 1 रुपए, 2 रुपए और 5 रुपए के नोटों को 1990 के दशक के प्रारंभ से धीरे-धीरे इसी मूल्यवर्ग में सिक्कों के रूप में बदल दिया गया।

सम सामयिक सिक्के

मूल्य वर्ग	धातु	भार	व्यास	आकार
	ताम्र-निकेल	9.00 ग्रा	23 मिमी	वृत्ताकार

	ताम्र-निकेल	6.00 ग्राम	26 मिमी वृत्ताकार	ग्यारह मेहराबवाला
	फेरेटिक स्टेनलेस स्टील	4.85 ग्राम	25 मिमी	वृत्ताकार
	फेरेटिक स्टेनलेस स्टील	3.79 ग्राम	22 मिमी	वृत्ताकार
	फेरेटिक स्टेनलेस स्टील	2.83 ग्राम	19 मिमी	वृत्ताकार
	फेरेटिक स्टेनलेस स्टील	2.00 ग्राम	16 मिमी	वृत्ताकार

अन्य

इस पृष्ठ में दी गई जानकारी वह जानकारी है जो हमारे सिक्का ढलाई की औपचारिक संरचना के पृष्ठों अर्थात इंडो-फ्रें□ सिक्कों, इंडो-पुर्तगाली सिक्कों इत्यादि, में सिक्का डिजाइन अवधारणाओं (रूपांकनों), टकसाली तकनीक और साथ ही सिक्का ढलाई के इतिहास के विभिन्न पक्षों से संबंधित जानकारी में सम्मिलित नहीं हो सकी है।

दोहा अंकित सिक्के

इतिहास के प्रारंभ से ही कलाकारों द्वारा लक्ष्मी और सरस्वती (मुद्रा और म्यूजेस) के संगम के विरोध के बावजूद दोनों के बीच एक क्षीणकाय परंतु अटूट रिश्ता बना रहा है। माना जाता है कि सरस्वती और लक्ष्मी साथ-साथ नहीं रहती तथा उनमें अल्प संबंध रहता है फिर भी पूरे इतिहास में कलाकारों के विरोध के बावजूद इन दोनों का साहचर्य बना हुआ है। सामान्यतया आम जनता के बीच समकालीन उत्कीर्णकों की कला का प्रदर्शन करने में सिक्के सर्वाधिक शक्तिशाली साधन हैं। अवधारणाओं (रूपांकनों) में राजा के चित्र, व्यक्तित्वों, वीरोचित कार्य, प्राणी और वनस्पति से लेकर प्रतीकों तक की विविधता पाई जाती है। पुराने भारतीय सिक्कों का रोचक अभिनव पहलू है उत्कीर्णक द्वारा सिक्कों पर कलात्मक रूप से अंकित किया गया काव्य, □ा शब्दों के अलंकरण से दृश्यात्मक संदेश को सुशोभित करता है।

गुप्त राजाओं (तीसरी से छठी शताब्दी तक) द्वारा सिक्कों पर काव्यात्मक मुद्रा-लेख (मुख्यतः प्रशंसात्मक) दिए जाने की शुरुआत की गई। उदाहरण के लिए गुप्तकालीन घुड़सवार छवि वाले सिक्कों पर काव्यात्मक ढंग से निम्नलिखित मुद्रा-लेख अंकित है :

गुप्तकुलामलचन्द्रो महेन्द्र विक्रमाजितो
यह गुप्त परिवार में दागरहित चंद्रमा □ैसा, अपराजेय,
महेन्द्र की तरह पराक्रमी है जो शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

इसी प्रकार चंद्रगुप्त II के सोने के सिक्कों पर वामस्थविला मान में निम्नानुसार मुद्रा-लेख पाया गया है:

नरेन्द्र चन्द्रः प्रथिता रणो रणे
□यित्य□ो भूवि सिंहविक्रमः
राजाओं के बीच चन्द्र अपनी युद्ध कला के लिए विख्यात, सिंह की तरह
पराक्रमी, अपराजेय और रण क्षेत्र में विजय प्राप्त करनेवाला है।

मध्यकालीन अवधि में चित्रात्मक और प्रतिमात्मक अवधारणाओं की जगह धीरे-धीरे अमूर्त डिजाइन और लिखावट की कला ने ले ली। कला के ये रु प सिक्कों पर काव्य प्रतिभा अंकित करने के लिए विशेष रूप से सहायक साधन बन गए। तथापि संदेशों में राजा की अधिकाधिक प्रशंसा ही की जाती रही। मुहम्मद शाह II (1442-1451 ई.) के सिक्कों पर गुजरात के सुल्तान ने निम्नानुसार दोहा मुद्रित किया जो अपनी तरह का पहला उदाहरण है।

सिक्का-ए-सुलतान गियासुद्दीन मुहम्मद शाह बाद
ता बदर□□र्ब गर्दुन कुर्स-ई-मिहिर- ओ-माह
जब तक सूरज चांद जन्नत के खजाने में रहेंगे
सुल्तान गियासुद्दीन मुहम्मद शाह के सिक्केबने रहेंगे।

यह काव्य परंपरा मुगलों द्वारा □ारी रखी गई और औरंगजेब के समय तक दोहे सिक्कों के डिजाइन का अंतर्निहित भाग बन चुके थे। बादशाह जहांगीर ने बेगम नूरजहां (विश्व का प्रकाश) के नाम से सिक्के शुरु किए □न पर उत्कीर्णित अनूठा दोहा पढ़ा जा सकता है :

बा हुक्म शाह जहांगीर याफता सत ज़ेवर
बा नाम-ए-नूर जहां बादशाह बेगम ज़ेर
नूर जहाँ, बादशाह बेगम (सम्राज्ञी) के नाम के मुद्रा-लेख के साथ
शाह जहांगीर के आदेश से जारी (सिक्का),
(इस) सोने के हाथ की सौ विशेषताएं हैं

ईस्ट इंडिया कंपनी ने काव्यात्मक दोहों की परंपरा जारी रखी। शाह आलम II के नाम मुर्शिदाबाद में जारी मुहर पर निम्नलिखित दोहा मुद्रित है।

सिक्का ज़द बार हफ्त किश्वर साया फज़ले इलाह
हमी दीन-ए-मुहम्मद शाह आलम बादशाह
धर्मरक्षक शाह आलम द्वारा जारी सिक्के अल्लाह की कृपा से
सात देशों में प्रचलित बने रहें

वर्ष 1835 में इंग्लिश प्रकार के सिक्केजारी किए जाने के साथ धीरे-धीरे यह परंपरा समाप्त हो गई।

दोहा अंकित सिक्का

भारतीय कागज़ी मुद्रा एक सिंहावलोकन : 1770-1998

भारत में वित्तीय लिखत और 'हुंडियों' का प्राचीन इतिहास है। आधुनिक अर्थ में कागज़ी मुद्रा का आरंभ अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ जब निजी बैंकों और साथ ही अर्ध-सरकारी बैंकों (बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बॉम्बे और बैंक ऑफ मद्रास जो प्रेसिडेन्सी बैंकों जैसे थे) द्वारा मुद्राएं जारी की गईं।

बड़ा चित्र देखने हेतु निम्नलिखित चित्रों पर क्लिक करें

बैंक ऑफ बंगाल

बैंक ऑफ बॉम्बे

बैंक ऑफ मद्रास

प्रारंभिक शृंखलाओं में बैंक ऑफ हिन्दोस्तान (1770-1832), जनरल बैंक ऑफ बंगाल एण्ड बिहार में (1773-75, वॉरन हेस्टिंग्ज द्वारा स्थापित) द्वारा जारी शृंखलाएं और अन्यों में बंगाल बैंक (1784-91) द्वारा जारी शृंखलाएं आती हैं। इनमें से कुछ ही नोट चलन में रह पाए।

कागज़ी मुद्रा अधिनियम, 1861 ने भारत सरकार को नोट जारी करने का एकाधिकार दे दिया जिसके कारण निजी और प्रेसिडेन्सी बैंकों द्वारा नोट जारी किया जाना समाप्त हो गया। भारत में कागज़ी मुद्रा का श्रेय सर जेम्स विल्सन की बौद्धिक प्रेरणा और वैयक्तिक क्रियाशीलता को जाता है। वे भारत के वाइसरॉय की कार्यपालक परिषद में पहले वित्त सदस्य थे। सर जेम्स की अकाल मृत्यु के साथ भारत में सरकारी कागज़ीमुद्रा जारी करने का कार्य जारी रखने की जिम्मेदारी उनके उत्तराधिकारी सैम्युअल लाइंग पर आ गई, जिन्होंने बाद में विल्सन के मूल प्रस्तावों में महत्वपूर्ण संशोधन किए।

भारत सरकार ने भारतीय रिज़र्व बैंक की 1 अप्रैल 1935 में स्थापना होने तक मुद्रा नोट जारी करने का कार्य जारी रखा। युद्ध के समय के उपाय के रूप में जब अगस्त 1940 में एक रुपए का नोट फिरसे शुरु किया गया तब भारत सरकार ने उसे सिक्के की हैसियत में जारी किया। भारत सरकार ने 1994 तक एक रुपए का नोट जारी करने का कार्य किया।

भारतीय मुद्रा के नोटों पर दिखाई देनेवाली अवधारणाओं में बदलती सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं और उस समय के वैश्विक दृष्टिकोण की झलक मिलती हैः समुद्री लुटेरे और

वाणिज्यवाद, उपनिवेशिक संघटन, निरंकुश साम्राज्यवाद, साम्राज्य की श्रेष्ठता से लेकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रतीकों और उसके बाद की प्रगति के रूप और अंत में गांधीवादी मूल्यों की याद दिलानेवाली अद्यतन शृंखलाओं तक ।

प्रारंभिक शृंखलाएं

जैसाकि हम जानते हैं, भारत में कागज़ीमुद्रा का आरंभ अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। मुगल साम्राज्य के धराशायी हो जाने के कारण यह समय अत्यधिक राजनितिक उथल-पुथल और उपनिवेशवादी शक्तियों के उदय का था। रा□शक्ति ढांचे में परिवर्तन, क्रांति, युद्ध और उपनिवेशवाद के पांव पसारने के कारण देशी बैंकरों को ग्रहण लग गया और भारत में उनके पास जो भारी धन था वह ऐसे एजेंसी हाउस के हाथ में चला गया जिन्हें राज्य का समर्थन प्राप्त था। कई एजेंसी हाउस ने बैंकों की स्थापना की।

नोटों के प्रारंभिक निर्गमकर्ताओं में जनरल बैंक ऑफ बंगाल एण्ड बिहार (1773-75) था जो एक राज्य प्रायोजित संस्था थी और जिसमें स्थानीय विशेषज्ञों की सहभागिता थी। इन नोटों को सरकारी समर्थन प्राप्त था। सफल और लाभप्रद होते हुए भी बैंक को सरकार की ओर से बंद कर दिया गया और वह अल्पजीवी रही। एलेक□डर एजेंसी हाउस द्वारा बैंक ऑफ हिन्दोस्तान (1770-1832) की स्थापना की गई और यह कंपनी विशेष रूप से सफल रही। तीन बार जनता का विश्वास खो चुकने के बाद भी वह बनी रही। अंत में जब इसकी मूल फर्म मेसर्स एलेक□डर एण्ड कंपनी 1832 में वाणिज्यिक संकट में डूबी तब इसी के साथ बैंक ऑफ हिन्दोस्तान भी डूब गया। बैंक नोटों के परिचालन में सरकारी समर्थन और राजस्व भुगतान में नोटों की स्वीकार्यता अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। तथापि, बैंक नोटों का व्यापक प्रयोग अर्ध-सरकारी प्रेसिडेन्सी बैंकों द्वारा जारी किए गए नोटों के साथ चलन में आया। इसमें सर्वाधिक उल्लेखनीय है बैंक ऑफ बंगाल जिसकी स्थापना 50 लाख सिक्का रुपया की पूंजी के साथ 1806 में बैंक ऑफ कलकत्ता के रूप में की गई थी। इन बैकों की स्थापना सरकारी चार्टर द्वारा की गई थी और इनका सरकार के साथ घनिष्ठ संबंध था। इन बैंकों को अपने-अपने सर्किल में परिचालन के लिए नोट जारी करने के विशेषाधिकार चार्टर के तहत दिए गए थे।

बैंक ऑफ बंगाल द्वारा जारी किए गए नोटों को मोटे तौर पर 3 शृंखलाओं में वर्गीकृत किया जा सकता है; 'यूनिफेस्ड' शृंखला, 'वाणिज्य' शृंखला और 'ब्रिटानिया' शृंखला। बैंक ऑफ बंगाल के प्रारंभिक नोट यूनिफेस्ड थे और एक स्वर्ण मुहर (कलकत्ता में सोलह सिक्का रुपए) के रूप में और उन्नीसवीं शताब्दी की प्रारंभिक अवधि में सुविधाजनक मूल्यवर्गों में अर्थात 100 रुपए, 250 रुपए, 500 रुपए, आदि में जारी किए गए थे।

बैंक ऑफ बंगाल के यूनिफेस्ड नोट

बाद में बैंक ऑफ बंगाल के नोटों पर बेलबुटे की डिजाइन में लाक्षणिक स्त्री की प्रतिमा उकेरी जाने लगी जो घाट पर बैठकर किए जानेवाले 'वाणिज्य' को साकार करती थी। नोटों को दोनों तरफ मुद्रित किया गया था। मुख भाग पर बैंक का नाम और मूल्यवर्ग तीन लिपियों उर्दू, बांगला और नागरी में मुद्रित किया गया था। ऐसे नोटों के पृष्ठभाग में अलंकरण के साथ बैंक का नाम दर्शाने वाली पट्टी मुद्रित की गई थी। उन्नीसवीं शताब्दी की मध्यावधि में 'वाणि□य' अभिधारणा का स्थान 'ब्रिटानिया' ने ले लिया। □ालसा□ी की आशंका का निर्मूलन करने के लिए इन नोटों में जटिल आकृतियां और बहुविध रंग होते थे।

वाणि□य शृंखलाएं

ब्रिटानिया शृंखलाएं

दूसरे प्रेसिडेन्सी बैंक की स्थापना 1840 में बंबई में की गई जिसका प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र के रूप में विकास हुआ। बैंक का इतिहास विविधतापूर्ण है । कपास के भावों में तेजी रु क □ाने के कारण आए संकट से 1868 में बैंक ऑफ बॉम्बे बंद हो गया। तथापि उसी वर्ष उसका पुनर्गठन किया गया। बैंक ऑफ बॉम्बे द्वारा जारी किए गए नोटों पर टाउन हॉल और माउंटस्टुअर्ट एलफिन्स्टन तथा जॉन मॅल्कोल्म के चित्र मुद्रित किए गए थे।

बैंक ऑफ बॉम्बे द्वारा जारी किए गए नोट

वर्ष 1843 में स्थापित बैंक ऑफ मद्रास तीसरा प्रेसिडेन्सी बैंक था। जितने भी प्रेसिडेन्सी बैंक थे, उनमें सबसे कम नोट इस बैंक ने जारी किए। बैंक ऑफ मद्रास के नोटों पर मद्रास के गवर्नर (1817-1827) सर थॉमस मुनरो का चित्र मुद्रित किया गया था ।

बैंक नोट जारी करनेवाले अन्य निजी बैंक थेः ओरिएंट बैंक कारपोरेशन जिसकी स्थापना 1842 में पश्चिमी भारत के बैंक के रू प में बंबई में की गई थी। इसके नोटों पर बंबई के टाउन हाल का आकर्षक □ित्र था। कमर्शियल बैंक ऑफ इंडिया जिसकी स्थापना 1845 में बंबई में की गई थी (जो विनिमय बैंक भी था), ने पश्□िमी और पूर्वी अवधारणाओं का संमिश्रण करते हुए बिल्कुल ही अलग तरह के असाधारण नोट जारी किए। वर्ष 1866 की भारी गिरावट की चपेट से बैंक बंद हो गया। कागज़ी मुद्रा अधिनियम 1861 ने इन बैंकों को नोट जारी करने के अधिकार से वंचित किया परंतु प्रेसिडेन्सी बैंक को सरकारी शेष का प्रयोग करते रहने दिया गया और प्रारंभ में उन्हें भारत सरकार की नोट शृंखलाओं का प्रबंध करने का अधिकार दिया गया।

ब्रिटिश इंडिया शृंखलाएं

कागज़ी मुद्रा अधिनियम 1861 के साथ ही ब्रिटिश इंडिया शृंखलाओं का प्रारंभ हुआ। इस अधिनियम ने सरकार को भारत में नोट जारी करने का एकाधिकार सौंप दिया। भारतीय उप-महाद्वीप के भौगोलिक विस्तार को देखते हुए उसमें कागज़ी मुद्रा का प्रबंधन करने का काम काफी जटिल था। प्रारंभ में प्रेसीडेंसी बैंकों की विद्यमान स्थिति को देखते हुए इन नोटों का परिचालन बढ़ाने के लिए उन्हें एजेंट के रूप में नियुक्त किया गया। अधिनियम, 1861 ने प्रेसिडेन्सी बैंकों को प्राधिकृत किया कि वे राज्य के सचिव के साथ करार करें कि वे भारत सरकार के निर्गम, भुगतान और वचन पत्रों के विनिमय के लिए एजेंट के रूप में काम करेंगे। भारतीय उप-महाद्वीप के विस्तृत विस्तार के कारण इन नोटों के प्रतिदान की समस्या सुलझाने के लिए 'मुद्रा सर्किल' की संकल्पना सामने आ गई जहाँ ये नोट वैध मुद्रा मानी जाती थी।

□सें-जैसे सरकार ने इस काम का अधिग्रहण किया वैसे-वैसे इन मुद्रा सर्किलों की संख्या ब□ती गई। प्रेसिडेन्सी बैंकों के साथ किए गए करार अंतिमतः 1867 में समाप्त किए गए। बाद में कागज़ी मुद्रा का प्रबंधन टकसाल मास्टरों, महालेखाकारों और मुद्रा नियंत्रक को सौंपा गया।

विक्टोरिया के चित्र की शृंखला

ब्रिटिश इंडिया नोटों का पहला सेट 'विक्टोरिया □त्र' शृंखला थी और इसे 10, 20, 50, 100, 1000 मूल्यवर्ग में जारी किया गया था। इनमें दो भाषा पैनल थे और उन्हें लवरस्टाक पेपर मिल (पोर्टल्स) में हाथ से बनाए गए पेपर पर एकतरफा मुद्रित किया जाता था। इनकी सुरक्षा विशेषताएं थीं-वॉटर मार्क (भारत सरकार, रुपए, दो हस्ताक्षर और लहरदार रेखाएं), मुद्रित हस्ताक्षर और नोटों का पंजीकरण।

दस रुपये

बीस रु पए

सौ रु पए

ब्रिटिश इंडिया नोटों से निधियों के एक स्थान से दूसरे सुदूरवर्ती स्थान (इंटर स्पाशियल) में अंतरण किए जाने में सुविधा हो गई। सुरक्षा के पूर्वोपाय के रूप में नोटों के दो टुकड़े किए जाते थे। एक टुकड़ा डाक द्वारा भेजा जाता था। उसकी प्राप्ति की पुष्टि हो जाने पर दूसरा आधा टुकड़ा डाक द्वारा भेज दिया जाता था।

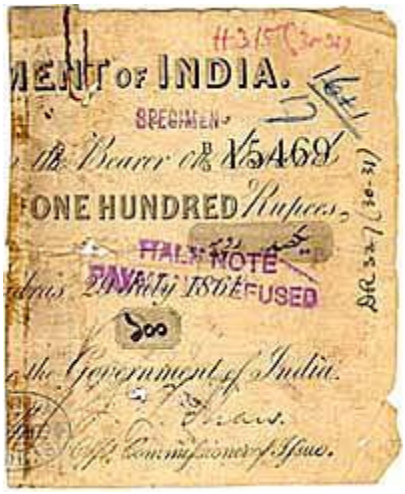

आधा नोट

अंडरप्रिंट शृंखला

बढ़ती जालसाजी को देखते हुए विक्टोरिया चित्र की शृंखला समाप्त की गई और उसका स्थान लिया एकतरफा 'अंडरप्रिंट शृंखला' ने जिसकी शुरुआत 1867 में हुई थी। जनता की मांग दर-किनार करते हुए पांच रुपए मूल्यवर्ग के नोट आरंभ किए गए। प्रारंभ में, जिस मुद्रा सर्किल द्वारा ये नोट जारी गए उसी मुद्रा सर्किल में उन्हें कानूनी रूप से भुनाया जा सकता था; तथापि 1903 और 1911 के बीच 5, 10, 50 और 100 रुपए के मूल्यवर्ग में नोटों को 'सार्वदेशिक' किया गया अर्थात मुद्रा निर्गमन-क्षेत्र से बाहर भी कानूनी रूप के उन्हें भुनाना संभव हो गया।

अंडरप्रिंट शृंखला वाले नोट हाथ से बनाए गए कागज़ (मोल्डेड पेपर) पर मुद्रित होते थे और उस पर चार भाषा पैनल थे (हरित शृंखला)। मुद्रा निर्गमन क्षेत्र के अनुसार भाषाएं अलग-अलग होती थीं। लाल अंडरप्रिंट शृंखला में भाषा पैनलों की संख्या बढ़ाकर आठ कर दी गई। सुधारित सुरक्षा विशेषताओं में लहरदार रेखाओंवाले वाटरमार्क, वाटरमार्क में निर्माता का कोड (तिथि निर्धारण में भ्रम पैदा करता था), ज्यामितीय डिज़ाइन और रंगीन अंडरप्रिंट शामिल थीं।

यह शृंखला 1923 में 'राजा के चित्र की शृंखला' के आरंभ होने तक मुख्यतः अपरिवर्तित रही।

हरित अंडरप्रिंट - पांच सौ रुपए

हरित अंडरप्रिंट - पांच रु पए

लाल अंडरप्रिंट - पचास रु पए

छोटे मूल्यवर्ग के नोट

भारत में छोटे मूल्यवर्ग के नोटों का आरंभ अत्यावश्यक कारणों से हुआ था। पहले विश्व युद्ध की अनिवार्यताओं की वजह से छोटे मूल्यवर्ग की कागज़ीमुद्रा प्रारंभ की गई। 30 नवंबर 1917 को एक रु पए के नोट प्रारंभ किए गए और उसके बाद दो रु पए आठ आने के नए आकर्षक नोट जारी किए गए। लागत-लाभ पर विचार करने पर 1 जनवरी 1926 में ये नोट बंद कर दिए गए। इन नोटों पर सर्वप्रथम किंग □ॉ□ V का □ित्र था। ये नोट इसके बाद शुरु की गई ‘रा□ा के □ित्र’ की शृंखला के प्रारंभिक नोट थे।

एक रु पया-मुख भाग

एक रु पया-पृष्ठ भाग

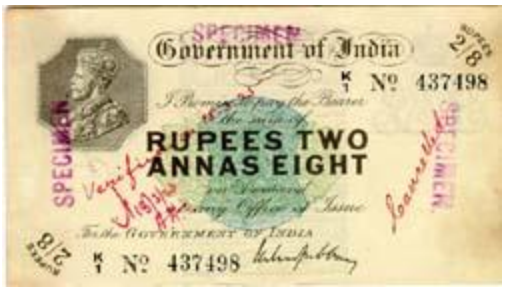

दो रु पया और आठ आना -पृष्ठ भाग

राजा के चित्र की शृंखला

इस शृंखला का नियमित निर्गम मई 1923 में दस रु पए के नोट पर □ॉ□ V के □ित्र को दर्शाते हुए प्रारंभ किया गया। रा□ा के □ित्र का मुद्रण ब्रिटिश भारत की सभी कागज़ी मुद्रा निर्गमों की अनिवार्य विशेषता बनी रही। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा मुद्रा नियंत्रक का कार्य ग्रहण किए जाने तक अर्थात 1935 तक भारत सरकार ने मुद्रा नोट जारी करने का कार्य जारी रखा। ये नोट 5, 10, 50, 100, 500, 1000, 10,000 रु पए के मूल्यवर्गों में जारी किए गए।

पचास रुपए

एक हजार रुपए

दस हजार रुपए

1928 में नासिक में मुद्रा नोट प्रेस की स्थापना के साथ भारत में मुद्रा नोटों का क्रमिक रूप से मुद्रण किया जाने लगा। नासिक प्रेस में 1932 तक संपूर्ण भारतीय मुद्रा नोटों का मुद्रण किया जाने लगा। उन्नत सुरक्षा विशेषताओं से वाटरमार्क में परिवर्तन हो गया और जटिल चित्र के डिज़ाइन तथा बहुरंगी मुद्रण किया जाने लगा।

ब्रिटिश इंडिया : रिज़र्व बैंक के निर्गम

भारतीय रिज़र्व बैंक का औपचारिक उद्घाटन सोमवार, 1 अप्रैल 1935 को किया गया और उसका केंद्रीय कार्यालय कलकत्ता में रखा गया।

भारतीय रिज़र्व बैंक का पहला केंद्रीय कार्यालय

सरकार द्वारा मुद्रा नियंत्रक और दी इम्पीरियल बैंक द्वारा सरकारी लेखा और लोक ऋण के प्रबंधन के तब तक किए जा रहे कार्यों को रिज़र्व बैंक ने अपने हाथ में लेते हुए अपने कार्य का प्रारंभ किया। कलकत्ता, बॉम्बे, मद्रास, रंगून, कराची, लाहौर और कानपुर में विद्यमान मुद्रा कार्यालय बैंक के निर्गम विभाग की शाखाएं हो गईं। (तब दिल्ली में कार्यालय का होना आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ था।)

भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 22 ने उसे अपने स्वयं के नोट जारी करने की तैयारी न होने तक भारत सरकार के नोट जारी करने का काम करते रहने के अधिकार दिए। बैंक के केंद्रीय बोर्ड ने सिफारिश की कि संशोधनों के साथ ही विद्यमान नोटों के सामान्य आकार, स्वरूप और डिजाइन को बनाए रखा जाए।

1937 की गरमी के दिनों में एडवर्ड VIII के चित्र के साथ नोट जारी करना निश्चित हो गया था। परंतु सांसारिकता से विरक्ति हो जाने के कारण एडवर्ड द्वारा पद परित्याग किए जाने से बैंक की शृंखला जनवरी 1938 तक विलंबित हो गई जब जॉर्ज VI के चित्र के साथ प्रथम पांच रु पए के नोट को जारी किया गया।

पांच रु पए- भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी किया गया पहला नोट

इसके बाद फरवरी में 10 रु पए , मार्च में 100 रु पए और जून 1938 में 1,000 रुपए और 10,000 रु पए के नोट जारी किए गए।

एक सौ रुपए

एक हजार रुपए

दस हजार रुपए

पहले गवर्नर , सर ओसबोर्न स्मिथ ने किसी भी बैंक नोट पर हस्ताक्षर नहीं किए थे; रिजर्व बैंक के प्रथम निर्गम पर दूसरे गवर्नर सर जेम्स टेलर ने हस्ताक्षर किए थे।

सर ओसबोर्न स्मिथ **सर जेम्स टेलर**

अगस्त 1940 में एक रुपए का नोट पुनः प्रचलन में लाया गया। एक बार फिर युद्ध के समय के उपाय के रूप में एक रुपए के सिक्के की हैसियतवाला यह सरकारी नोट मुद्रा अध्यादेश 1940 (1940 का IV) के अनुसरण में जारी किया गया। 2 रुपया और 8 आना के प्रचलन पर विचार किया गया परन्तु उसके स्थान पर 3 मार्च 1943 को 2 रुपए का नोट □ारी किया गया।

एक रु पया मुख भाग

एक रु पया पृष्ठ भाग

दो रुपए

युद्ध के दौरान भारतीय मुद्रा को अस्थिर करने के लिए जापानी कारगुजारियों में आम तौर पर गवर्नर सी.डी.देशमुख के द्वारा हस्ताक्षरित 10 रु पए के नोटों में उच्च गुणवत्तावाली □ालसा□ी की गई।

श्री सी.डी. देशमुख

इसके कारण वाटरमार्क और मुखभाग डिजाइन में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया और उसमें □□ VI के अर्द्ध मुख चित्र के स्थान पर पूर्ण मुख चित्र किया गया। एक अतिरिक्त सुरक्षा उपाय के रूप में, भारत में पहली बार सुरक्षा धागा शुरु किया गया ।

□□ VI का अर्द्ध मुख

□□ VI का मुख भाग

□□ VI की शृंखला 1947 तक और उसके बाद अवरुद्ध शृंखला के रूप में 1950 तक, जब तक स्वतंत्रता के बाद नोट जारी किए गए, □ारी रही ।

भारतीय गणतंत्र के निर्गम

सिक्का ढलाई और मुद्रा का अधिकार तथा संप्रभुता का विषय ऐतिहासिक काल से एक-दूसरे से तार्किक रू प से न सही परंतु भावनात्मक रू प से जुड़ा रहा है और आज भी इन मामलों पर चर्चा छिड़ जाती है।

मुद्रा प्रबंध का कार्य उपनिवेश से स्वतंत्र भारत को अंतरित होना बिल्कुल सरल कार्य था। 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को औपनिवेशिक साम्राज्य की समाप्ति और भारतीय स्वतंत्रता का बिगुल बजा।तथापि, 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र की स्थापना की गई। मध्यावधि में रिज़र्व बैंक ने विद्यमान नोटों के निर्गम को जारी रखा।

भारत सरकार ने 1 रु पए के नोट का नया डिजाइन 1949 में जारी किया।

भारत सरकार - एक रुपया

स्वतंत्र भारत के लिए प्रतीकों का चयन करना था। एक बार यह महसूस किया गया कि रा□ी के चित्र को हटाकर महात्मा गांधी का चित्र लाया जाए। इस आशय का डिज़ाइन तैयार किया गया। परंतु अंतिम विश्लेषण के समय गांधी के चित्र के स्थान पर सारनाथ के सिंह की आकृति के लिए आम राय बनी। नोटों का नया डिज़ाइन आम तौर पर पहले जैसा ही था।

दस रुपए - रा□ी का चित्र

दस रुपए - अशोक स्तंभ

1953 में नए नोटों पर मुख्य रू प से हिंदी प्रदर्शित की गई। रु पया के बहुवचन पर हुई चर्चा का समाधान रु पए के पक्ष में किया गया। उच्च मूल्यवर्ग के नोट (1,000 रुपए, 5,000 रुपए, 10,000 रुपए) 1954 में पुनः आरंभ किए गए।

एक हजार रुपए-तं□ावुर मंदिर

पांच हजार रुपए-गेटवे ऑफ इंडिया

दस हजार रुपए - सिंह की आकृति, अशोक स्तंभ

छठें दशक की मंदी की प्रारंभिक अवधि के कारण मितव्ययिता अपनानी पड़ी और 1967 में नोटों का आकार छोटा किया गया। 1969 में महात्मा गांधी की जन्मशताब्दी समारोह के सम्मान में स्मारक डिजाइन शृंखला शुरु की गई जिसकी पृष्ठभूमि में सेवाग्राम आश्रम में बैठे गांधी का चित्र था।

एक सौ रुपए-स्मारक डिजाइन

लागत-लाभ पर विचार करने पर बैंक ने 1972 में 20 रुपए और 1975 में 50 रुपए के मूल्यवर्ग के नोटों की शुरु आत की।

बीस रु पए

पचास रु पए

उच्च मूल्यवर्ग के नोटों का 1946 में जिन कारणों से विमुद्रीकरण किया गया था, उन्हीं कारणों से दुबारा 1978 में उनका विमुद्रीकरण किया गया। अस्सी के दशक में पूर्णतः नये नोटों के सेट जारी किए गए। इन नोटों पर अंकित अवधारणा पहले के नोटों पर अंकित की जानेवाली अवधारणाओं से सर्वथा भिन्न थी। इन अवधारणाओं में विज्ञान और प्रौद्योगिकी (2 रु पए के नोट पर आर्यभट्ट), प्रगति (1 रु पए के नोट पर तेल रिग और 5 रु पए के नोट पर फार्म मशीनीकरण) को दर्शाने के अलावा 20 रु पए और 10 रु पए के नोटों पर भारतीय कला को (कोणार्क चक्र, मोर) प्रमुखता दी गई थी।

मुद्रा प्रबंध करने में विकास की ओर अग्रसर अर्थव्यवस्था की मांग और उसके साथ गिरती जा रही क्रयशक्ति, दोनों का ही ध्यान रखना था। 500 रु पए का नोट महात्मा गांधी के चित्र के साथ अक्तूबर 1987 में जारी हुआ। इन नोटों पर वाटरमार्क में सिंह और अशोक स्तंभ को दर्शाया जाना जारी रहा।

पांच सौ रु पए

महात्मा गांधी शृंखला

रिप्रोग्राफी तकनीक की प्रगति के साथ परंपरागत सुरक्षा विशेषताएं अपर्याप्त समझी गईं। यह आवश्यक था कि नयी विशेषताएं लाई जाएं और 1996 में नयी 'महात्मा गांधी शृंखला' आरंभ की गई। नयी विशेषताओं में बदला हुआ वाटरमार्क, खिड़कीद्वार सुरक्षा धागा, अव्यक्त चित्र और नेत्रहीनों के लिए उत्कीर्णन विशेषताएं शामिल हैं ।

दस रु पए : आकार 137 x 63 मिमी

पचास रु पए : आकार 147 x 73 मिमी

सौ रुपए : आकार 157 x 73 मिमी

पांच सौ रु पए : आकार 167 x 73 मिमी

एक हजार रु पए : आकार 177 x 73 मिमी

अन्य

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक के भारत को मोटे तौर पर ब्रिटिश भारत, रियासतों, पुर्तगाली क्षेत्र (गोवा, दमण और दीव) तथा पांडिचेरी के **फ्रें** क्षेत्र में विभाजित किया जा सकता है।

जहां कई रियासतें अपने स्वयं के सिक्के जारी कर रही थीं, केवल दो **जम्मू और कश्मीर** तथा **हैदराबाद** रियासतों ने वास्तविक रूप से कागज़ीमुद्रा जारी की। पुर्तगाली और फ्रेंच दोनों क्षेत्रों ने कागज़ी मुद्रा जारी की। बर्मा, जहां रंगून में रिज़र्व बैंक का कार्यालय था, 1 अप्रैल 1937 से राजनीतिक रूप में भारत से अलग हो गया । इंडो-बर्मा मौद्रिक व्यवस्थाओं के तहत रिज़र्व बैंक बर्मा की मुद्रा का प्रबंधन करता रहा।

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान कई छोटी-छोटी रियासतों ने सिक्कों के स्थान पर सांकेतिक आपातकालीन टोकन जारी किए जिन्हें '**नकद कूपन**' माना जाता था। जापानियों का कब्जा समाप्त होने के बाद विनिमय की सुविधा के लिए **बर्मा** में भी आपातकालीन मुद्रा जारी की गई।

पारंपरिक रूप से **फारस की खाड़ी** के क्षेत्र में भारतीय मुद्रा व्यापक रूप से चलन में रही है। भारत ने भी फारस की खाड़ी के क्षेत्र में परिचालन के लिए नोट तथा **ह** यात्रियों के लिए विशेष नोट जारी किए हैं।

बर्मा के लिए जारी नोट

नोट निर्गम के इतिहास का सर्वाधिक कौतूहल भरा विषय यह है कि भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी किए गए नोट भारत में वैध मुद्रा नहीं थी। बर्मा की राजधानी रंगून मुद्रा नियंत्रक के मूल मुद्रा सर्किल कार्यालयों में से एक था। बर्मा 1938 में भारत से अलग हो गया, तथापि भारतीय रिज़र्व बैंक ने बर्मा सरकार के बैंकर के रूप में कार्य किया और वह बर्मा मौद्रिक व्यवस्था आदेश, 1937 के अनुसार नोट जारी करने के लिए उत्तरदायी था। बैंक ने मई 1938 में केवल बर्मा के लिए नोट जारी किए जो भारत में वैध मुद्रा नहीं थी। जून 1942 में जापानियों ने बर्मा पर कब्जा किया जो 1945 तक बना रहा। तदनंतर, बर्मा के मौद्रिक मामलों को बर्मा का ब्रिटिश सैनिक प्रशासन देखता था। रिज़र्व बैंक ने अपना रंगून कार्यालय 1945 में फिर से प्रारंभ किया और 1 अप्रैल 1947 तक बर्मा सरकार के बैंकर के रूप में कार्य किया।

भारतीय रिज़र्व बैंक, रंगून कार्यालय

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बर्मा के लिए जारी नोट

रियासतों के लिए आपातकालीन शृंखला : नकद कूपन

दूसरे विश्व युद्ध के कारण संसाधनों पर युद्ध का प्रभाव हुआ। टकसाल भी इसका अपवाद नहीं थे और उनकी क्षमता का अधिकाधिक दोहन 'शाही प्रयोजनों' के लिए सिक्के की ढलाई करने में किया जाने लगा। पूरे भारत में 1942 तक छोटे सिक्कों की अत्यधिक कमी महसूस की जाने लगी थी। जहां ब्रिटिश भारत ने डाक प्रतिनिधियों के साथ व्यवस्था की वहीं पश्चिमी भारत की छोटी-छोटी रियासतों □से बल्वां बीकानेर, बूंदी, गोंडल, इंदरगढ़, □ूनागढ़, जसदान, कच्छ मेंगनी, मुली, मोरवी, मंग्रोल, नवानगर, नवलगढ, पलिताना, राजकोट, सैलाना, सायला, विट्ठलगढ़ ने कमी पूरी करने के लिए सांकेतिक नकद कूपन जारी किए। अधिकांश नकद कूपन मुद्रण-फलक पर अपरिष्कृत रूप से मुद्रित किए गए थे। भारतीय कागज़ी मुद्रा के इतिहास में उनका स्थान आपातकालीन मुद्रा (आपातकालीन शृंखला) के रूप में है। प्रसंगवश, केवल दो रियासतों ने कागज़ी मुद्रा जारी की - जम्मू और कश्मीर ने 1876 में और हैदराबाद ने 1918 से। यद्यपि कच्छ सरकार ने मुद्रा नोटों के नमूने तैयार किए थे परंतु उन्हें जारी नहीं किया गया।

बूंदी (अब राजस्थान में)

बीकानेर (अब राजस्थान में)

जूनागढ़ राज्य (अब गुजरात में)

मेंगनी (अब गुजरात में)

नवानगर (अब गुजरात में)

सैलाना राज्य (अब मध्य प्रदेश में)

सायला राज्य (अब गुजरात में)

ह□शृंखला

भारत सरकार ने हज यात्रियों के लिए भारत से सऊदी अरब जाने वालों के लिए नोट जारी किए। ये नोट दस रु पए और सौ रु पए के मूल्यवर्ग में जारी किए गए थे और नोट के मुख भाग पर 'हज' अक्षर मुद्रित किया गया था। नोटों पर क्रम संख्या के पहले 'एचए' अक्षर थे। इन नोटों को तब बंद कर दिया गया जब केवल खाड़ी के देशों में प्रचलन के लिए जारी नोटों को चलन से वापस लिया गया।

हैदराबाद की शृंखलाएं

मीर कमर-उद्-दीन ने 1724 के आस-पास, जब वह दक्खन का वजीर था, असफ जहाँ की उपाधि से स्वयं को विभूषित करते हुए स्वतंत्रता प्राप्त कर ली और हैदराबाद रियासत की स्थापना की तथा हैदराबाद के निज़ामों का राजवंश स्थापित किया। 1857 के बाद के समय हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी और बाद में उसे 'परम महामहिम निज़ाम का स्वतंत्र उपनिवेश' के नाम से जाना जाने लगा। इस रियासत में आज के आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के क्षेत्र सम्मिलित थे, जिनका विलय भारतीय संघ में किया जा चुका है। मुद्रा और सिक्कों के संबंध में निजामों के सिक्के 1858 तक मुगल बादशाह के नाम में जारी किए गए। इसके बाद वे स्वतंत्र रूप से जारी किए गए और नये सिक्कों का नाम रखा गया 'हाली सिक्का' अर्थात वर्तमान सिक्का। जहां तक कागज़ीमुद्रा का संबंध है हैदराबाद सरकार ने निजी बैंकरों और स्थानीय 'साहूकारों' को संगठित करते हुए ऐसी बैंकिंग कंपनी स्थापित करने के लिए अपनी तरफ से कई प्रयास किए जो अन्य कार्य के साथ कागज़ी मुद्रा जारी कर सके। भारतीय राज्यों द्वारा कागज़ीमुद्रा जारी किए जाने के प्रति ब्रिटिश सरकार के प्रतिरोध के कारण कागज़ी मुद्रा जारी करने के इस रियासत के सभी प्रयास विफल रहे। पहले विश्व युद्ध के संकट, ब्रिटिश सरकार की लड़ाई के प्रयास में भारतीयों और हैदराबाद के द्वारा दिए गए योगदान और उप महाद्वीप में चांदी में आई तीव्र कमी के कारण इस रियासत का कागज़ी मुद्रा जारी करने का मार्ग 1918 में प्रशस्त हुआ और उसने हैदराबाद मुद्रा अधिनियम के अधीन कागज़ी मुद्रा जारी की। नोटों को 100 रुपए और 10 रुपए के मूल्यवर्गों में जारी किया गया। मुद्रा का नाम 'उस्मानिया सिक्का' निर्दिष्ट किया गया और नोटों की छपाई मेसर्स वॉटर्लू एण्ड सन्स द्वारा की गई। बाद में 1919 में एक रुपया और पांच रुपए के नोट जारी किए गए और 1926 में एक हजार रुपए के नोट जारी किए गए। नासिक में भारतीय मुद्रा नोट प्रेस स्थापित किए जाने के बाद हैदराबाद के नोटों का मुद्रण भी मितव्ययिता और सुरक्षा के कारणों से वहीं होने लगा। हैदराबाद रियासत पुलिस कार्रवाई के बाद भारतीय संघ में सम्मिलित होने पर सहमत हो गई। उस्मानिया सिक्के का 1959 में विमुद्रीकरण किया गया। भाषावार राज्यों का पुनर्गठन किए जाने के साथ ही हैदराबाद राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया।

पांच रु पए के नोट (मुख भाग और पृष्ठ भाग)

दस रु पए के नोट (मुख भाग और पृष्ठ भाग)

इंडो-फ्रें□शृंखलाएं

भारत और पूरब में व्यापार संबंध स्थापित करने में पुर्तगालियों ने फ्रांसीसियों की प्रारंभिक योजनाओं को विफल किया। वर्ष 1664 में लुईस XIV के शासनकाल में फ्रांसीसी वित्त मंत्री जीन-बाप्टिस्ट कॉल्बर्ट को पहली अर्थक्षम फ्रांसीसी कंपनी (फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी) स्थापित करने में सफलता मिली। कंपनी ने पश्चिमी भारत में सूरत में अपनी एक फैक्टरी स्थापित की और 1674 में पाँडिचेरी अधिग्रहीत करते हुए दक्षिण भारत में अपने पाँव जमाए। मुगल साम्राज्य के विघटन और इससे उपजे शून्य को भरने के लिए स्थानीय राजशक्तियों में लगी आपसी होड़ के कारण अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को भारत में अंग्रे□ी-फ्रांसीसी संघर्ष प्रारंभ करने के लिए जमीन मिल गई। इसके परिणामस्वरू प फ्रांसीसियों ने अपने अधिकतर क्षेत्र गवाएं। फ्रांसीसी क्षेत्र भारतीय संघ को अंतरित किए गए। वास्तव में पांडिचेरी का अंतरण 1 नवंबर 1954 को किया गया और कानूनन यह अंतरण 28 मई 1956 को हो गया। बैंक डी ल-इन्डोचीन ने डिक्रियों के अधीन, जिसका उल्लेख नोटों पर है, फ्रांसीसी इंडिया के लिए कागज़ीमुद्रा जारी की। सबसे पहले 'रू पी' मूल्यवर्ग के नोट 1898 में जारी किए गए। एक रू पी में 8 'फेनोन्स' होते थे और एक फेनोन दो आनों के बराबर था। ये 50 और 10 के मूल्यवर्गों में थे। पहले विश्व युद्ध के तुरंत बाद एक रुपया के नोट जारी किए गए। भारत में फ्रांसीसियों के साम्राज्य की नींव डालनेवाले डुप्लीक्स का चित्र 50 रु पए के नए नोटों पर अंकित किया गया था। ये नोट 1954 में भारतीय मुद्रा के प्रचलन में आने तक चलन में थे।

CINQ ROUPIES
5
FIVE RUPEES
820
BANQUE DE L'INDOCHINE
Z.10

புதுவை
ஐந்து
ரூபாய்கள்
இந்து சோத்து பாங்க்

BANQUE DE L'INDOCHINE
CINQUANTE
ROUPIES
FIFTY RUPEES
50
50
50

50
இந்து சோத்து பாங்க்
புதுவை
ரூபாய்கள்

इंडो-पुर्तगाली शृंखलाएं

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी और ई. चौथी शताब्दी के बीच यूनानी और रोमन सभ्यता के साथ भारत के बहुत ही व्यापक संबंध थे। अलेक्जेंडर द्वारा पंजाब पर किए गए आक्रमण से यूनानी संबंधों को और अधिक मजबूती मिली तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार के कारण रोमन साम्राज्य के साथ गहरे संबंध स्थापित हो गए। पश्चिम के साथ नये संबंधों का आरंभ पुर्तगाली नाविक वास्को-डी-गामा के 1948 में कालिकत में प्रवेश के साथ हुआ। फ्रान्सिस्को डी अलमेडा और अफान्सो डी अल्बुकर्क ने भारत और पूरब में पुर्तगाली राजशक्ति स्थापित करने और उसे मजबूत करने में सहायत की। पश्चिमी भारत में गोवा क्षेत्र पर 1510 में आधिपत्य प्राप्त किया गया। एक शताब्दी से भी अधिक समय तक भारत के साथ व्यापार में पुर्तगालियों का वास्तविक रू प से एकाधिकार रहा। डच और अंग्रेजों के आगमन से उनका यह एकाधिकार भंग हुआ। तथापि उन्होंने 1961 तक गोवा, दमण और दीव क्षेत्रों पर अपना अधिकार बनाए रखा। पहली इंडो-पुर्तगाली कागज़ी मुद्रा लगभग 1883 में 'रु पिया' मूल्यवर्ग के नोटों में जारी की गई। इन नोटों पर पुर्तगाली राजा का चित्र छापा गया था। ये नोट 5, 10, 20, 50, 100 और 500 के मूल्यवर्गों में थे। भारत में पुर्तगाली शासित क्षेत्रों के लिए कागज़ी मुद्रा जारी करने की जिम्मेदारी 1906 में 'बंको नेसियोनाल अल्ट्रामेरिनो' को सौंपी गई। बैंक द्वारा जारी प्रारंभिक नोटों पर बैंक की मुद्रा अंकित होती थी। वर्ष 1917 में 4 टांगा, 8 टांगा और 1 रु पिया तथा 2½ रु पिया के नये मूल्यवर्ग की मुद्रा जारी की गई। अधिकतर शृंखलाओं पर वाणिज्य और पानी पर चलते जहाजों की अवधारणा अंकित की गई थी, जो कई उपनिवेशवादी शृंखलाओं मे समान बात थी। कुछ नोटों पर भारतीय प्रतीक और अवधारणाएं (वास्तुशिल्पीय और दुर्लभ प्राणी) अंकित की गई थीं। बाद के नोटों में अफान्सो डी अल्बुकर्क के चित्र अंकित थे। गोवा में प्रचलित मुद्रा प्रणाली रेइस, टांगा और रु पिया थी और एक रु पिया 16 टांगों से बनता था। 1959 में मूल्यवर्गीय इकाई रु पिये से बदलकर एस्क्यूडो हो गई जिसमें एक एस्क्यूडो 100 सेंट एवोज का होता था। 30, 60, 100, 300, 600 और 1000 के मूल्यवर्गों में नये नोट प्रारंभ किए गए। ये नोट 1961 तक चलन में थे। जब गोवा का विलय भारतीय संघ में किया गया तब इन नोटों का स्थान भारतीय मुद्रा ने ले लिया।

30
BANCO NACIONAL ULTRAMARINO
30
ÍNDIA PORTUGUESA
TRINTA ESCUDOS
406966
406966
30
30
BANCO NACIONAL ULTRAMARINO
30
TRINTA ESCUDOS

300
BANCO NACIONAL ULTRAMARINO
300
ÍNDIA PORTUGUESA
TREZENTOS ESCUDOS
000000
SPECIMEN
000000
300
300
BANCO NACIONAL ULTRAMARINO
SPECIMEN
300
TREZENTOS ESCUDOS

जम्मू और कश्मीर शृंखला

मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही अफगानों और बाद में 1819 में सिक्खों और इसके बाद ब्रिटिशों ने 1845 में कश्मीर पर कब्जा किया। ब्रिटिशों ने 1846 में गुलाब सिंह को जम्मू और कश्मीर के मुख्य जागीरदार के रू प में समर्थन दिया। महाराजा ने 1947 में तत्कालीन भारत के अधिराज्य में विलय करने का निर्णय लिया।

महाराजा रणबीर सिंह के शासनकाल में 1877 में वाटरमार्क पेपर पर कागजी मुद्रा जारी की गई। ये नोट अधिक लोकप्रिय नहीं थे और बहुत ही छोटी अवधि के लिए चलन में रहे। इन नोटों पर डोगरा परिवार के अधिष्ठाता ‘ सूर्य ’ को अंकित किया गया था।

फारस की खाड़ी के लिए शृंखला

भारतीय रुपया और बाद में कागज़ी मुद्रा की शृंखलाएं पारंपरिक रूप से फारस की खाड़ी में प्रचलन में बनी रही। इन क्षेत्रों में बैंकों द्वारा रिज़र्व बैंक को ये नोट प्रस्तुत किए जाने पर समकक्ष विदेशी मुद्रा में प्रतिदेय होते थे।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के समय भारत के पास विदेशी मुद्रा की स्थिति संतोषजनक थी। विकास की आकांक्षा और बढ़ी मांग से विदेशी मुद्रा स्थिति पर काफी दबाव आ गया। विदेशी मुद्रा की अपर्याप्तता की स्थिति के कारण खाड़ी के साथ पारंपरिक मुद्रा व्यवस्थाओं को काम में लाने की संभावनाओं की तलाश की गई। कुप्रथाओं का निवारण करने अथवा कम से कम उन्हें न्यूनतम करने के रूप में केवल खाड़ी (कुवैत, बहरिन, कतार और ट्रुशियाल राज्यों (अब संयुक्त अरब अमीरात) में चलन हेतु 1950 के दशक में भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नोटों की अलग शृंखला जारी की गईं। नोटों का सम-सामयिक डिजाइन यथावत था परंतु उनका रंग अलग था और उन पर 'ज़ेड' उपसर्ग था। ये नोट एक रुपया, दस रुपए और सौ रुपए के मूल्य वर्गों में जारी किए गए थे और केवल निर्गम के बंबई कार्यालय में प्रतिदेय थे। जैसे-जैसे खाड़ी के देशों ने अपनी स्वयं की मुद्रा जारी करनी शुरु किया वैसे-वैसे 1960 के दशक के प्रारंभ से समय के साथ-साथ ये नोट हटा लिए गए और 1970 तक उनका प्रयोग समाप्त हो गया।

हुंडी

भारतीय उप महाद्वीप में व्यापार और ऋण लेनदेनों के लिए वित्तीय लिखतों के रूप में हुंडी का इस्तेमाल किया जाता था। उनका इस्तेमाल

- विप्रेषण लिखत (एक स्थान से दूसरे स्थान तक निधियों के अंतरण) के रूप में
- ऋण लिखत {पैसे उधार लेने (आइओयू)}, के रूप में
- व्यापार लेनदेनों के लिए (विनिमय बिल के रूप में)

होता था।

तकनीकी रूप से हुंडी व्यक्ति द्वारा लिखा गया बिना शर्त आदेश है जिसमें दूसरे व्यक्ति को निदेश होता है कि वह आदेश में लिखे गये व्यक्ति को कतिपय मुद्रा राशि का भुगतान करे। हुंडी अनौपचारिक प्रणाली का भाग होने के कारण कानूनी रूप से मान्य नहीं है और वह परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881 के अधीन नहीं आती है। यद्यपि सामान्य तौर पर यह विनिमय बिल की तरह है फिर भी अक्सर उसका प्रयोग देशी बैंकरों द्वारा जारी किए गए चेकों के समान किया जाता रहा है।

हुंडी : नमूने

ब्रिटिश इंडिया हुंडी

ब्रिटिश इंडिया हुंडी

हुंडी संबंधी बैंक ज्ञापन

विदेशी बिल

अफीम हुंडी

रियासती हुंडी

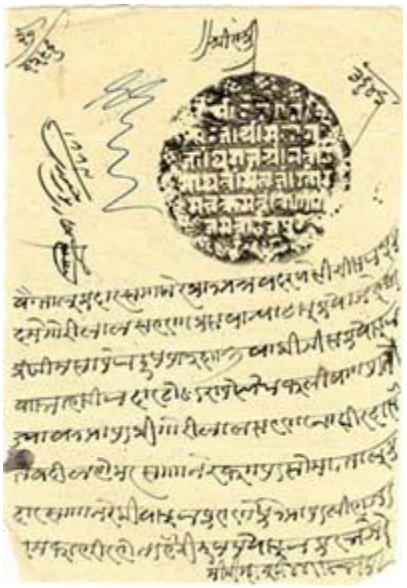

अन्य

दर्शनी हुंडी का नमूना

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में

निसानी हमारे घरू खाते नाम मंदना

दस्तखत ब्रिजकिशोर भार्गव के हुंडी लिखे मुजीब सिकर देसी

'श्री रामजी

सिद्ध श्री पटना शुभस्थाने चिरंजीव भाई रिखबचंद ब्रिद्धिचन योग श्री जयपुर से लिखी ब्रिजकिशोर भार्गव की आसीस बांचना, आपरांच हुंडी एक रुपिया 2,000 अक्षरे रु पया दो हजार के निमे रुपिया एक हजार का दूना यहां रखा साह श्री पूनमचंदजी हरकचंदजी पास मिति मांगसीर बाद बारस (12वीं) पुगा तुरत साह-जोग रुपिया चालान का देना. संबत 1990, मिति मांगसीर बाद बारस

रु.2,000

नेमे नेमे रुपिया पांच सौ का चौगुना पूरा दो हजार कर दीजो।

'1' चिरंजीव रिखबचंद ब्रिद्धिचंद, पटना।

अनुवाद

यह राशि हमारे खाते में नामे लिखें।

हस्ताक्षर : ब्रिजकिशोर भार्गव द्वारा लिखित हुंडी स्वीकार करें।

मेसर्स रिखबचंद ब्रिद्धिचंद, स्वनामधन्य पटना शहर का पुत्र जिनके नाम पर जयपुर से ब्रिजकिशोर भार्गव द्वारा रु. 2,000 (अक्षरों में दो हजार रु पए मात्र) के लिए हुंडी लिखी गई है। यदि एक हजार रु पए को दुगना किया जाता है तो हुंडी की राशि बनती है। यहां से मेसर्स पूनमचंद हरकचंद के नाम में 12 मांगसीर 1990 को हुंडी आहरित की गई है जिसे प्रस्तुत किए जाने पर प्रचलित मुद्रा में भुगतान करें।

2,000 रुपए

500/- रुपए का □ार गुना 2000/- रुपए जिसके लिए हुंडी

आहरित की गयी

हुंडी पर वाटरमार्क

हुंडी पर राजस्व मुहर का प्रतीत होना

ब्रिटिश इंडिया

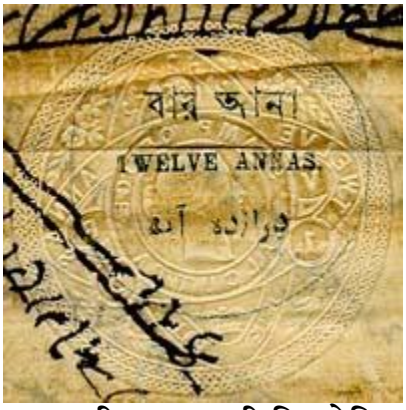

नक्काशी मुहर - रानी विक्टोरिया

नक्काशी मुहर

निजी निर्गम पर चिपकने वाली टिकट

रा□स्व फॉर्म - राजा एडवर्ड का चित्र

रा□स्व फॉर्म - अशोक स्तंभ

सरकारी वचनपत्र (जी पी नोट), बांड और शेयर

भारत सरकार का वचनपत्र

भारत सरकार का वचनपत्र (रियासत)

बैंक ऑफ बंगाल का शेयर प्रमाणपत्र

इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया शेयर प्रमाणपत्र

भारतीय रिजर्व बैंक शेयर प्रमाणपत्र

गवर्नरों की सूची (कार्यरत सर्वप्रथम)

डॉ. वाइ.वी.रेड्डी
6 सितंबर 2003 से

डॉ. विमल जालान
22 नवंबर 1997 से
5 सितंबर 2003

डॉ.सी.रंगराजन
22 दिसंबर 1995 से
22 नवंबर 1997
22 दिसंबर 1992 से
21 दिसंबर 1995

एस.वेंकिटरमणन
22 दिसंबर 1990 से
21 दिसंबर 1992

आर.एन.मल्होत्रा
04 फरवरी 1985 से
22 दिसंबर 1990

ए.घोष
15 जनवरी 1985 से
4 फरवरी 1985

एस.जगन्नाथन
16 जून 1970 से
19 मई 1975

बी.एन.अदारकर
4 मई 1970 से
15 जून 1970

एल.के. झा
1 जुलाई 1967 से
3 मई 1970

पी.सी.भट्टाचार्य
1 मार्च 1962 से
30 जून 1967

एच.वी.अयंगार
1 मार्च 1957 से
28 फरवरी 1962

के.जी.आंबेगांवकर
14 जनवरी 1957 से
28 फरवरी 1957

डॉ.मनमोहन सिंह
16 सितंबर 1982 से
14 जनवरी 1985

डॉ.आइ.जी.पटेल
1 दिसंबर 1977 से
15 सितंबर 1982

एम. नरसिंहम
2 मई 1977 से
30 नवंबर 1977

के.आर.पुरी
20 अगस्त 1975 से
2 मई 1977

एन.सी.सेन गुप्ता
19 मई 1975 से
19 अगस्त 1975

सर बेनेगल रामा राव
1 जुलाई 1949 से
14 जनवरी 1957

सर चिंतामण डी.देशमुख
11 अगस्त 1943 से
30 जून 1949

सर जेम्स ब्रेड टेलर
1 जुलाई 1937 से
17 फरवरी 1943

सर ओसबोर्न ए. स्मिथ
1 अप्रैल 1935 से
30 जून 1937

उप गवर्नरों की सूची

नाम	अवधि
सर जेम्स बी. टेलर	01.04.1935 से 30.06.1937
कैप्टन सर सिकंदर हयात खान	01.04.1935 से 20.10.1935
मणिलाल बी. नानावटी	21.12.1936 से 21.12.1941
सी.डी.देशमुख	22.12.1941 से 10.08.1943
व□ाहत हुसैन	16.08.1943 से 04.12.1945
सी.आर. त्रेवोर	16.08.1943 से 31.12.1949
एम.जी. मेखरी	08.07.1946 से 07.07.1951
डब्ल्यू.टी.मॅकलुम	15.04.1946 से 14.08.1946 15.04.1948 से 14.07.1948
एन.सुंदरेसन	01.01.1950 से 31.12.1954
राम नाथ	08.06.1951 से 08.07.1951 09.07.1951 से 08.07.1956 09.07.1956 से 08.07.1959
□.वी.□ाशी	11.09.1952 से 10.01.1953
के.जी.आंबेगांवकर	01.03.1955 से 13.01.1957 01.03.1957 से 29.02.1960
बी.वेंकटप्पा	01.07.1955 से 30.06.1960 01.07.1960 से 28.02.1962
एम.वी.रंगाचारी	01.03.1960 से 28.02.1965
डी.जी.कर्वे	01.03.1962 से 29.02.1964
सी.एस.दिवेकर	12.11.1962 से 11.11.1965
एम.आर.भिडे	29.02.1964 से 25.01.1967
बी.के.मदन	01.07.1964 से 31.01.1967
बी.एन.आडारकर	16.06.1965 से 03.05.1970
ए. बक्शी	24.01.1967 से 08.09.1969
प्रो. जे.जे,. अंजारिया	01.02.1967 से 28.02.1970
पी.एन.डामरी	13.02.1967 से 12.02.1972 13.02.1972 से 15.03.1972
आर.के.हजारी	27.11.1969 से 26.11.1977

वी.वी.□री	17.11.1970 से 30.11.1975
एस.एस.शिरालकर	18.12.1970 से 25.07.1976
आर.के.शेषाद्री	26.07.1973 से 25.07.1976
के.एस. कृष्णास्वामी	29.12.1975 से 31.03.1981
पी.आर.नांगिया	29.12.1975 से 15.02.1982
जे.सी. लुथर	04.01.1977 से 01.06.1977
एम. रामकृष्णय्या	02.01.1978 से 31.01.1983
ए. घोष	21.01.1982 से 20.01.1987 21.01.1987 से 20.01.1992
सी. रंगराजन	12.02.1982 से 11.02.1987 12.02.1987 से 20.08.1991
एम.वी. हाटे	12.03.1982 से 11.03.1985
आर.के. कौल	01.10.1983 से 30.09.1986
पी.डी. ओझा	29.04.1985 से 28.04.1990
पी.आर. नायक	01.04.1987 से 31.03.1992
आर. जानकीरामन	16.05.1990 से 15.05.1993
एस.एस. तारापोर	30.01.1992 से 30.09.1996
डी.आर. मेहता	11.11.1992 से 21.02.1995
एस.पी.तलवार	07.11.1994 से 30.06.1999 01.07.1999 से 30.06.2001
आर.वी. गुप्ता	02.05.1995 से 30.11.1997
वाइ.वी. रेड्डी	14.09.1996 से 31.08.2001 01.09.2001 से 31.07.2002
जगदीश कपूर	01.01.1997 से 30.06.2001 01.07.1999 से 30.06.2001
वेपा कामेसम	01.07.2001 से 23.09.2003 24.09.2003 से 23.12.2003
जी.पी. मुनियप्पन	01.07.2001 से 31.05.2003
राकेश मोहन	09.09.2002 से 08.09.2005
के.जे. उदेशी	10.06.2003 से 12.10.2005

भारत में आधुनिक बैंकिंग का आगमन

1720 से 1850 तक

स्थापित	असफल (एफ) अथवा विलय (एम)	बैंक	स्थान
1720	1770	बैंक ऑफ बॉम्बे	बंबई
1770	एफ 1832	बैंक ऑफ हिंदोस्तान	कलकत्ता
1773	एफ 1775	जनरल बैंक ऑफ बेंगाल और बिहार	कलकत्ता
1784	एफ 1791	बेंगाल बैंक	कलकत्ता
1786	एफ 1791	जनरल बैंक ऑफ इंडिया	कलकत्ता
1788	अज्ञात	दि कर्नाटिक बैंक	अज्ञात
1806	एम 1920	बैंक ऑफ कलकत्ता बैंक ऑफ बेंगाल, 1808	कलकत्ता
1819	एफ 1828	दि कमर्शियल बैंक	कलकत्ता
1824	एफ 1829	दि कलकत्ता बैंक	कलकत्ता
1828	अज्ञात	बैंक ऑफ इंडिया	
1829	एफ 1848	दि यूनियन बैंक	कलकत्ता
1833	अज्ञात	दि गवर्नमेंट सेविंग□ बैंक	कलकत्ता
1833	एफ 1866	दि आगरा एण्ड यूनाइटेड सर्विस बैंक लि. (पहले दि आगरा बैंक और बाद में दि आगरा एण्ड मास्टरमैन की बैंक, लंदन)	आगरा
1835	एफ 1837	दि बैंक ऑफ मि□□पुर	मि□□पूर
1836	जन्म से ही मृत	बैंक ऑफ इंडिया (लंदन)	
1840	एफ 1859	नॉर्थ वेस्टर्न बैंक ऑफ इंडिया	मसूरी
1840	एम 1920	बैंक ऑफ बॉम्बे : 1868 में पुनः स्थापित	
1841	1842	बैंक ऑफ एशिया	लंदन
1841	एम 1849	दि बैंक ऑफ सिलोन (ओरिएंटल बैंकिंग कार्पोरेशन द्वारा अधिग्रहीत)	कोलंबो
1842	जन्म से ही मृत	दि ईस्ट इंडिया बैंक, लंदन	

1842	एफ 1884	दि ओरिएंटल बैंक कार्पोरेशन, (पूर्व का नाम बैंक ऑफ वेस्टर्न इंडिया)	बंबई
1842	1863	दि आगरा सेविंग□ फंड	आगरा
1843	एम 1920	बैंक ऑफ मद्रास	मद्रास
1844	अज्ञात	दिल्ली बैंक कार्पोरेशन लि.	दिल्ली
1844	एफ 1850	दि बनारस बैंक	बनारस
1844	एफ 1893	सिमला बैंक लि.	सिमला
1845	एफ 1866	दि कमर्शियल बैंक ऑफ इंडिया	बंबई
1845	एफ 1851	दि कानपुर बैंक	कानपुर
1846	एम 1862	ढाका बैंक (बैंक ऑफ बेंगाल में विलीन)	ढाका
1846	एफ 1894	बिना गारंटी की सेवाएं	आगरा बैंक लि.
1852	जन्म से ही मृत	लंदन बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया एण्ड इंडिया	आगरा
1852	एफ 1855	चार्टर्ड बैंक ऑफ एशिया	लंदन
1853		चार्टर्ड मर्कंटाइल बैंक ऑफ इंडिया, लंदन एण्ड □इना	लंदन
1853		चार्टर्ड बैंक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया एण्ड □इना	लंदन
1854	एफ 1857	दि लंदन एण्ड ईस्टर्न बैंकिंग कार्पो..	लंदन
1854		दि कॉम्पतोइर डी एस्कॉमप्ट एण्ड पैरिस	पैरिस
स्रोत : कूकी, ब्रूनयेट, टंडन, महाराष्ट्र राज्य अभिलेखागार और भारिबैं			

रिज़र्व बैंक की मुद्रा
की कहानी

भारतीय रिज़र्व बैंक की मुद्रा

बैंक की सामान्य मुद्रा, जिसका उपयोग बैंक के प्रतीक के रूप में करेंसी नोटों, चेकों और प्रकाशनों में करना था, का चयन एक ऐसा मुद्दा था जिसे बैंक की स्थापना के आरंभिक काल में ही तय करना था।

मुद्रा पर सामान्य विचार निम्नानुसार थेः

1. मुद्रा में बैंक की सरकारी हैसियत पर बल दिया जाना चाहिए, परंतु अत्यधिक घनिष्ठता न दर्शाते हुए।
2. उसकी डिजाइन में भारतीयता की झलक हो।
3. वह सादी, कलात्मक और संदेश की दृष्टि से सटीक होनी चाहिए; तथा
4. डिजाइन ऐसी होनी चाहिए कि बिना मूलभूत परिवर्तन किए उसका प्रयोग पत्र शीर्ष, आदि में किया जा सके।

इस प्रयोजन से विभिन्न मुद्रा, पदक और सिक्कों की जांच की गई। ईस्ट इंडिया कंपनी की सिंह और ताड़ के पेड़ के रेखाचित्र वाली दोहरी मुहर अधिक उपयुक्त पाई गई; परंतु यह निर्णय लिया गया कि भारत के वैशिष्टपूर्ण प्राणी के रूप में सिंह के स्थान पर बाघ को रखा जाए।

बैंक शेयर सर्टिफिकेट पर मुहर लगाने की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह काम मद्रास की एक फर्म को दिया गया। बोर्ड ने 23 फरवरी 1935 को हुई अपनी बैठक में मुद्रा की डिजाइन को अनुमोदित किया परंतु प्राणी की आकृति में सुधार करने की इच्छा व्यक्त की। दुर्भाग्य से उस समय कोई प्रमुख परिवर्तन करना संभव नहीं था। परंतु उप गवर्नर सर जेम्स टेलर इससे संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने भारत सरकार की टकसाल और प्रतिभूति मुद्रण प्रेस, नासिक द्वारा नये रेखाचित्र तैयार किए जाने में काफी रुचि ली। अच्छी डिजाइन के लिए आधार उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने बेलवेदेरे, कलकत्ता के प्रवेशद्वार पर अवस्थित बाघ की मूर्ति की तस्वीर लेने की व्यवस्था की। रेखाचित्रों के साथ कुछ न कुछ गडबड़ी होती रही जिसके चलते सर जेम्स को सितंबर 1938 में निम्नानुसार टिप्पणी करनी पड़ी :

------ का पेड़ ठीक है परंतु उसका बाघ ऐसे दिखाई दे रहा है मानो वह श्वान-वर्ग का प्राणी हो और मुझे आशंका है कि श्वान और पेड़ के डिजाइन से तिरस्कार के साथ उपहास की भावना पैदा होगी। ------- का बाघ निश्चित रूप से अच्छा है परंतु पेड़ के कारण वह खराब दिख रहा है। पेड़ का तना बहुत लम्बा है और शाखाएं मकड़ी की तरह हैं, परंतु मेरे विचार से बाघ के पैर के नीचे ठोस पंक्ति का प्रयोग करने और पेड़ को अधिक मजबूत एवं छोटा करने से हम उसकी डिजाइन का अच्छा प्रभाव प्राप्त कर सकेंगे।

बाद में और अधिक प्रयास किए जाने पर प्रतिभूति मुद्रण प्रेस, नासिक द्वारा तैयार किए गए बेहतर प्रूफ मिलना संभव हुआ। तथापि, अंतिम रूप से यह निर्णय लिया गया कि बैंक की विद्यमान मुद्रा में कोई परिवर्तन न किया जाए और नये रेखाचित्रों का प्रयोग बैंक द्वारा जारी बैंक के मुद्रा नोटों, पत्र-शीर्षों, चेकों और प्रकाशनों पर प्रतीक-चिह्न के रूप में किया □ाए।

स्रोत : हिस्ट्री ऑफ दि रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया